PREFACE

THE following five lectures and sermon were prepared for a gathering of Indian Christian Workers, who recently assembled in Benares.

They are to some extent supplementary to a small volume published some two years ago. They do not, however, in the same way compare the Hindu and Christian doctrines on the subjects. On the doctrines of Incarnation and Atonement there is not sufficient in the way of analogy or contrast to justify an attempt to institute a detailed comparison. The teaching in Hinduism, however, on these and kindred subjects has been in the writer's mind in preparing these lectures.

Two such vast subjects as the Incarnation and the Atonement could not be treated fully in a book of this size, but the endeavour has been made to deal with the broad outlines of the doctrines, and to establish the truth that the Atonement holds a central and pre-eminent position in the Christianity of the New Testament.

At the close of the lectures a sermon was delivered, in Urdu, and the substance of it has been appended to the present volume. An endeavour was made to present the distinctly spiritual bearings of these doctrines, both as regards the being and life of God, and the lives of those who would be His followers.

May this little book contribute in some feeble way to His honour whose glory was so graciously manifested in that life of humility and that atoning death.

BENARES:
November, 1908.

EDWIN GREAVES.

सूचीपत्र।

१ अध्यायः।

ईश्वर का अवतार लेना और प्रायश्चित्त करना।

इन दो सिद्धान्त का सम्बन्ध और श्रेष्ठता।

२ अध्याय

इन दो सिद्धान्तों का संकेत पुराने नियम में

३ अध्याय

ईश्वर के पुत्र का अवतार लेना

४ अध्याय

प्रायश्चित्त करना

५ अध्याय

प्रायश्चित करना

---

१ अध्याय:

ईश्वर का अवतार लेना और प्रायश्चित्त करना

इन दो सिद्धान्तों का सम्बन्ध और श्रेष्ठता

ईश्वर-विद्या में यह दो सिद्धान्त प्रधान हैं। हम देखते हैं कि मनुष्य ईश्वर से दूर हो गया है, वह पाप के कारण ऐसा अज्ञानी और भ्रष्ट हो गया है कि अपने बुद्धिबल से वह न तो ईश्वर को जान सकता न तो उससे मेल कर सकता है। मनुष्य निर्बल होकर रो २ कर पुकारता है कि ईश्वर कौन है ? कहां हैं ? कैसे हैं ? मैं कहां जाकर उनकी खोज करूं और क्या करके उन से मेल करूं ?

जो कुछ बन पड़ेगा सो ईश्वर के अनुग्रह से होवेगा, मनुष्य की चेष्टा से नही। ईश्वर का दर्शन तब होगा जब कि परमेश्वर अपने तईं दिखा देवे और मेल तब ही होगा जब कि ईश्वर कृपा कर के मनुष्य को मिला लेवें।

और निस्सन्देह बहुत मनुष्य ऐसे हैं जो ईश्वर की खोज नही करते हैं। वे उनको भूल जाते हैं और यहां लों सांसारिक काम काज और भोग विलास मे फँस गये हैं कि ईश्वर और मुक्ति की तरफ़ ध्यान भी नहीं देते हैं।

कभी न भूलना चाहिये कि ईश्वर-विद्या मे यह बात मुख्य नहीं कि मनुष्य ईश्वर के निकट पहुंचता या उन को ढूंढता। पर यह कि ईश्वर मनुष्य को ढूंढते हैं।

ईश्वर अवतार लेने के द्वारा अपने तईं मनुष्यों को दिखलाते और प्रायश्चित करने से एक उपाय तैयार करते कि जिस से मनुष्य अपने पापो से मुक्त होकर ईश्वर के साथ मेल करे ।

अवतार लेने के द्वारा ईश्वर मनुष्य के पास आते हैं और प्रायश्चित करने के द्वारा एक सीधा मार्ग तैयार करते हैं कि जिस से मनुष्य ईश्वर के पास पहुँच सकता है ।

कुछ मालूम होता है कि बिना ईश्वर के अवतार लेने के मनुष्यो के लिये प्रायश्चित नही हो सकता है ।

मनुष्यों की निर्बलता

नाना प्रकार से यह बात स्पष्ट दिखलाई देती है कि मनुष्यों की मुक्ति के लिये बहुत ही ज़रूर है कि ईश्वर अवतार लेवे और प्रायश्चित करे । हम देखते हैं कि समय समय पर और देश २ मे मनुष्य ईश्वर की खोज मे बहुत चेष्टा कर रहे हैं, पर खोज करते २ हार गये हैं । उत्तर और दक्षिण, पूरब और पश्चिम में ढूंढते २ वे या तो मानते हैं कि हम ने उन को नहीं पाया या ऐसी २ बातें बतलाते हैं कि जिन से मालूम होता है कि चाहे वे आप मानें या न मानें तौ भी सचमुच उन्होंने ईश्वर का दर्शन नहीं पाया । चन्द लोग तो अपने हाथो से मूरत बना के या सूर्य्य की ओर दृष्टि कर के बोलते कि यही ईश्वर हैं या अजीब प्रकार के शब्द मात्र बनाकर बतलाते कि ईश्वर ऐसे हैं या वैसे है । चन्द लोग बतलाते कि ईश्वर निर्गुण है और इस कारण न तो उन का कोई रूप हो सकता न उन का कोई बर्णन किया जा सकता है ।

देखिये भी कि मनुष्य कैसे २ उपाय निकालते हैं इस आसरे पर कि हम उन के द्वारा ईश्वर को राज़ी रखें और उन से मेल करें।

वे बलिदान नाना प्रकार के चढ़ा देते कभी फूल कभी धन कभी पशु भी हनन कर के चढ़ाते, बरन कभी अपने बालकों को भी बलिदान ठहरा कर चढ़ा देते हैं। लोग नाना प्रकार के कष्ट अपने ऊपर सह लेते और दूर २ की यात्रा करते। कौनसी बात है जिसको मनुष्यों ने किसी न किसी समय और किसी न किसी देश में नही किया हो, इस आसरे पर कि ऐसा करते हुए हम अपने पापों के लिये ईश्वर से क्षमा प्राप्त करेंगे और उन के निकट पहुँच कर मेल रखेंगे? तौ भी मालूम होता है कि इन उपायो से मन मे पूरी सन्तुष्टता नही जम गयी। वास्तव में मनुष्य कैसा ही क्यों न करे तौभी अपने पापो को न दूर कर सकते न मिटा सकते हैं केवल ईश्वर यह कर सकते हैं।

जब ईश्वर हमारे निकट आवे तब भेंट हो सकती है, जब वह हमारे पापो को मिटावे तब वे मिठ जायंगे और यह दोनों बातें ईश्वर के अवतार लेने और प्रायश्चित करने पर निर्भर हैं।

ईश्वर का और संसार और मनुष्य का क्या सम्बन्ध ?

अब इस बात की जांच करनी चाहिये कि ईश्वर और मनुष्य के बीच में कैसी अलगाई हुई है ? ईश्वर मनुष्य से और प्रकृति या तत्त्वों से क्या सम्बन्ध रखते हैं ? क्या सचमुच यह बात सम्भव है कि महान परमेश्वर तत्त्वों से और मनुष्य के स्वभाव से मिलकर अवतार ले सकते हैं ? इन प्रश्नों की सम्बन्धी बातें नाना प्रकार की और बहुत गम्भीर दिखाई देती हैं, इनका निर्णय इन व्याख्यानो में नही हो सकता तौ भी दो चार बातों पर ज़रूर कुछ सोच बिचार करना चाहिये।

इन बातों के बारे में बहुत से अनोखे मत प्रचलित हैं (१) चन्द लोग बतलाते हैं कि तत्त्व या प्रकृति स्वाधीन है, परमेश्वर के बस मे नहीं, वह सदा सर्वदा ईश्वर से अलग है और किसी प्रकार का मेल नही हो सकता है। (२) वेदान्ती लोग कहते है कि प्रकृति और संसार वास्तव मे है ही नही और इस कारण उनका ईश्वर से अलग होना या उन से मिल जाना केवल वचन मात्र का वादविवाद है। (३) चन्द लोग बतलाते हैं कि मनुष्य भी नाममात्र का मनुष्य है सचमुच मनुष्य मे जो कुछ है सो ईश्वर ही है मनुष्य नहीं और उसमे जो कुछ ईश्वर नही सो है ही नही। इस मत के अनुसार ईश्वर को छोड़ और ईश्वर से अलग कोई वस्तु है ही नहीं। यहां मेल करने की क्या ज़रूरत ? (४) दूसरे लोगों के मत के अनुसार मनुष्य मे एक अजीब प्रकार की मिलावट हुई है, ईश्वरत्त्व और प्रकृति के संयोग से वह बन गया है और उस की मुक्ति तो यही है कि उस का आत्मा प्रकृति से छुटकारा पाकर परमात्मा में लौलीन हो जाय। इन को छोड़ और २ बहुत मत और सिद्धान्त है पर उन सब का बर्णन क्या उन की चर्चा तक यहां नहीं हो सकती है।

ईश्वर और सृष्टि

लोग जो चाहे सो कहे पर सृष्टि तो है चाहे ख़ियाली संसार हो या तत्त्वो से बना हो। पर वह है मौजूद, उस मे हम जीते रहते हैं और ज़रूर यह पूछना है कि वह कैसा है और कहां से आया ?

सदा से ईश्वर है पर उन को छोड़ कर और किसी व्यक्ति या शक्ति या पदार्थ के बारे मे हम नहीं कह सकते हैं कि वह सदा से है। फिर ईश्वर स्वयम्भु और स्वतन्त्र हैं, दूसरे दूसरे पदार्थ और दूसरे दूसरे आत्मा सब के सब पराधीन हैं, हां ईश्वर ही के अधीन हैं।

किस प्रकार से ईश्वर ने संसार को और मनुष्य को बनाया हम न बतला सकते हैं न समझ सकते हैं पर यह बात कभी हमारी समझ मे नहीं आ सकती कि वे आप से आप उत्पन्न हुए या कि वे सदा से हैं। ईश्वर का और संसार का एक विशेष सम्बन्ध है, ईश्वर उस के सृजनहार और पालनहार हैं और हर प्रकार से उस की सुध लेते हैं। हम उचित रीति से कह सकते है कि संसार ईश्वर से अलग है तौ भी अजीब प्रकार का सम्बन्ध रहता है। यह सम्बन्ध बहुत दृढ़ है तौ भी यह नहीं कहा जा सकता है कि ईश्वर और संसार दोनों एक है।

जब हम कहते कि ईश्वर संसार में हैं इस कथन का क्या अर्थ है? मालूम होता है कि यह समझना चाहिये कि ईश्वर के ख़ियाल और ईश्वर की मनसा तत्त्वों के द्वारा और तत्त्वों के क्रमानुसार प्रबन्ध के द्वारा प्रकाशित की जाती हैं। और साथ इस के यह भी मान लेना चाहिये कि ईश्वर ही की शक्ति से संसार उत्पन्न हुआ और तब से लेकर अब तक कुछ न कुछ स्थिर रहता है। संसार का आधार ईश्वर ही हैं।

संसार के सब पदार्थ ईश्वर की शक्ति या बुद्धि या उन के स्वाभाविक गुणो को दिखला सकते हैं। पर एक एक कर के वे यह केवल अपनी २ अवस्था या श्रेणी के अनुसार कर सकते हैं। मिट्टी तो ईश्वर की कुछ शक्ति दिखलाती है पर ऐसे प्रकार से नही जैसे कि सूर्य्य कर सकता है। फिर जीव जन्तु ईश्वर के ऐसे गुण कुछ प्रकट कर सकते हैं जो निर्जीव वस्तुओं से प्रकट नही किये जा सकते हैं। और फिर मनुष्य ईश्वर के ऐसे ऐसे गुणो को अपनी करनी और स्वभाव के द्वारा दिखला सकता है जो पशु और निर्जीव पदार्थों के द्वारा कभी प्रकाशमान नहीं होते हैं।

अवतार लेना

पर क्या हम कह सकते है कि परमेश्वर संसार और सांसारिक बस्तुओ और जीव जन्तुओ और मनुष्यो के द्वारा अवतार लेते हैं ? नही, इनके द्वारा वे अपनी शक्ति और बुद्धि और प्रवीणता और अपनी दया और दूसरे गुणों को कुछ प्रगट करते हैं पर उनमे वे आप अवतार नही लेते है। अपने गुणो को प्रगट करना और बात है अवतार लेना तो और बात। अवतार लेने मे विशेषता यह है कि उसमे ईश्वर की व्यक्तिता संसार मे विद्यमान हो जाती है।

यहाँ मैं इस कारण इन सब बातो को पेश करता हूँ कि इस बात का विचार किया जाय कि यद्यपि यीशु मसीह को छोड़ कर दूसरे के द्वारा ईश्वर का अवतार नही हुआ है तौभी नाना प्रकार की बातें ऐसी हैं और विशेष करके मनुष्य हैं कि जिनके द्वारा ईश्वर के अवतार लेने की मानो परछाई या आगमवाणी हुई है। कभी लोग कहते हैं कि ईश्वर यहाँ तक संसार से भिन्न और संसार से परे हैं कि सम्भव नही कि वे इसमे देहधारी होकर अवतार लेवे। मै कहता हूँ कि ईश्वर संसार से दूर नहीं पर हर प्रकार से दिखला चुके हैं कि संसार तो मेरा है मैने उसको बनाया, मैं उसकी सुध लेता हूँ, दिन प्रति दिन मैं नाना प्रकार से यह दिखलाता हूँ कि आत्मिक रीति से मैं इसमे विद्यमान हूँ। यदि बात ऐसी ही है तो उसपर सोच विचार करते करते हम ईश्वर के अवतार लेने का सिद्धान्त स्वीकार करने को कुछ तैयार हो गये हैं और समझने लगे हैं कि यदि ईश्वर ऐसे अजीब प्रकार से संसार की चिन्ता और सुध लेते है तो कुछ आश्चर्य्य की बात नहीं अगर वे आप देहधारी होकर यहाँ आवें।

दूसरे मतों में अवतार लेने की चर्चा

मालूम होता है कि न केवल मसीही मत मे बरन दूसरे मतों में भी ईश्वर के अवतार लेने के बारे मे बहुत से वर्णन पाये जाते है और विशेष करके हिन्दुओं के शास्त्रों मे अवतार लेने के बहुत बखान हैं। पर उनमें और मसीही सिद्धान्त में बहुत और बड़े अन्तर हैं।

१—हिन्दू बतलाते हैं कि ईश्वर ने बार बार अवतार लिया है, मसीही कहते कि उन्हों ने एक ही बार अवतार लिया।

२—हिन्दू अवतारों मे यह बात दिखलाई देती है कि ईश्वर ने मनुष्य का रूप धारण किया पर सचमुच मनुष्य नही बन गया। अर्थात् उन्हों ने मानो मनुष्यता को वस्त्र के समान पहिन लिया पर वास्तव में अपने सब ईश्वरीय गुणों और शक्तियों को साथ लेके आये। अर्थात् रूप तो मनुष्य का था किन्तु जो उस रूप के भीतर रहा सो पूरा ईश्वर था। आगे कुछ विस्तार पूर्वक यह बात दिखलाई जायगी कि मसीही मत मे अवतार लेने का ऐसा वर्णन नही है, ईश्वर न केवल मनुष्य का रूप धारण करके मनुष्य दिखलाई देते थे पर सचमुच मनुष्य हुए और एक बात को छोड़ के (अर्थात् कि उन्ही में पाप का लवलेश नही पाया जाता था) उन्हो ने वास्तविक मनुष्यता को स्वीकार किया।

३—हिन्दू बतलाते हैं कि यद्यपि हमको चाहिए कि अवतार को निष्पाप समझें तौभी वे उन अवतारों के जीवन चरित्रों में नाना प्रकार के ऐसे ऐसे कर्म्म लिखते है जो साधारण मनुष्यों में पाप गिने जायंगे। वे बतलाते है कि जो जो कर्म्म दूसरे मनुष्यों मे पाप हैं सो ईश्वर के अवतारो मे पाप नही हैं। जैसे कि तुलसीदास ने कहा है "समरथ कहँ नहिं दोष गोसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं"।

पर मसीही कहते हैं कि ऐसा नहीं, ईश्वर मनुष्य का अवतार लेकर वही कर्म्म करते रहेंगे जो मनुष्य के करने के योग्य हैं और कोई ऐसा काम न करेंगे जो मनुष्य में पाप गिना जायगा।

४—फिर हिन्दू ईश्वर के अवतार लेने के कई कारण बतलाते है और एक विशेष कारण यह बतलाते हैं कि दुष्टों को मारने के लिये अवतार लेते थे, पर मसीही धर्म्मशास्त्र मे नित यह वर्णन किया गया है कि ईश्वर के अवतार लेने का एक ही कारण था अर्थात् पापियो और दुष्टो को बचाने के लिये।

५—हिन्दू शास्त्रो में लिखा है कि ईश्वर ने अवतार लेकर बचन-मात्र से लोगो को बचाया। पापी कैसे ही दुष्ट क्यो न होवे पर यदि मरते समय एक बार राम का नाम लेवे तो वे मुक्त होकर स्वर्ग के अधिकारी होते हैं, पर मसीहियो के बैबल में यह बर्णन किया जाता है कि ईश्वर के अवतार ने ऐसा नहीं किया, वे पापियो को उनके पापों से छुड़ा देत थे और उनको धर्म्मी बनाते थे। उन पापियो के लिये मुक्ति यह न थी कि वे मरते ही बैकुंठ मे जाएं बरन यह कि वे जीते जी अपने पापी स्वभाव से न्यारे होकर पवित्र स्वभाव पावे, यही तो मुक्ति है।

६—हिन्दू तो अवतारो के जीवन चरित्रो मे नाना प्रकार की ऐसी ऐसी करनी बतलाते है जो मनुष्यो की मुक्ति से कुछ सम्बन्ध नही रखती हैं। राम और कृष्ण कैसे कैसे कर्म्म किया करते थे जो मनुष्यो को पाप से बचाने के और उनको पवित्र करने के बारे मे कुछ सम्बन्ध नही रखते थे। पर चारो सुसमाचारो को पढ़िये तब मालूम होगा कि ईश्वर के अवतार ने अर्थात् यीशु मसीह ने नित उन कामो को किया जो विशेष रीति से मनुष्यों की मुक्ति के उपयोगी थे।

ईश्वर का अवतार या तो नित हुआ करता है या तो कभी नहीं होता है।

ईश्वर के सच्चे अवतार लेने के दो विशेष प्रकार के विरोधी आज कल होते है। १ वे जो कहते हैं कि यह बात कभी नहीं हो सकती। और-२ वे जो बतलाते कि यह बात नित हुआ करती है, वे स्वीकार करते हैं कि उपमा की रीति से हम कह सकते हैं कि ईश्वर का अवतार होता है, पर यह बात मानने को तैयार नहीं कि एक ही बार और विशेष प्रकार से ईश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा अवतार लिया। वे कहते कि ईश्वर मानो सब मनुष्यों मे व्याप्त होकर अवतार लेते है।

इन दो प्रकार के विरोधियों के बारे मे कुछ निर्णय करना चाहिये।

१—इन लोगों का क्या अर्थ है जो कहते हैं कि ईश्वर का अवतार नहीं हो सकता है ? वे सब एक ही मत के अनुगामी नही है। वे नाना प्रकार के कारणों से अवतार का सिद्धान्त अस्वीकार करते है।

चंद लोग कहते हैं कि ईश्वर तो आत्मा है और इस कारण अवतार नहीं ले सकते क्योंकि ऐसे लोगों की समझ मे आत्मा मे और तत्त्वों मे किसी प्रकार का मेल हो नहीं सकता है। परमात्मा जो है सो कभी संसार और सांसारिक वस्तुओं से किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रख सकते है। पर हम देख चुके है कि ऐसा कहना बे ठिकाना है। वे जो ऐसा कहते है यहां तक अज्ञानी हैं कि वे अपनी अज्ञानता नही जानते है। हम सचमुच नही जानते कि तत्त्व क्या है तो हम कैसे कहे कि ईश्वर उससे सम्बन्ध नहीं रख सकते। क्या तत्त्व एक दूसरा ईश्वर है जो ईश्वर का शत्रु है और कभी किसी तरह का मेल करेगा नहीं ! क्या तत्त्व आप से आप है और ऐसा बलवन्त है कि वह कभी ईश्वर के वश मे नही आवेगा और न उन से किसी प्रकार का

सम्बन्ध रखेगा ! ऐसा समझना सर्वथा व्यर्थ है। तत्त्व जो कुछ हो सो हो पर कोई मनुष्य किसी प्रकार का प्रमाण नही दे सकता कि ईश्वर उस से सम्बन्ध नहीं कर सकते हैं। यह सिद्धान्त तो स्वीकार करने के योग्य दिखलाई देता है कि वह ईश्वर का बनाया है और ईश्वर उस के आधार हैं। जहां तक हमारा अनुभव पहुँचता वहां हम देखते है कि आत्मा और तत्त्व के बीच विशेष और दृढ़ सम्बन्ध रहते हैं। हम तो आत्मा हैं हमारे सोच विचार अभिलाषा प्रेम शत्रुता इत्यादि तत्त्व तो नहीं हैं वे न तो मांस हैं न लोहू न हड्डी वे आत्मिक गुण हैं, तौ भी वे तत्त्वो से कैसे २ सम्बन्ध रखते हैं। हम कहीं जाने की अभिलाषा करते और हम वहां जाते। हम यहां रहते हुए बम्बई नगर के बारे मे तरह तरह की भावना कर सकते हैं पर किसी न किसी अजीब प्रकार से हम शारीरिक तरह से वहां पहुँच सकते है और वहां के पदार्थों को देख सकते और छू सकते है। यहां तक हमारे आत्माओं और तत्त्वो से दृढ़ सम्बन्ध हैं कि यह बात बहुत कठिन हो जाती कि दोनो के बीच मे हम सीमा बांधें। वास्तव मे यह स्वीकार करना उचित है कि हम कैसे समझे कि बिना तत्त्व आत्मा क्या है और बिना आत्मा तत्त्व क्या !

पर कदाचित् चन्द लोग यह कहेगे कि भला हो या न हो मान लिया जाय कि मनुष्यो के आत्माओ से और तत्त्वों से सम्बन्ध है, पर क्या प्रमाण है कि परमात्मा से और तत्त्वो से सम्बन्ध है और जब तक कि यह बात प्रामाणिक न होवे तब तक हम नही स्वीकार कर सकते हैं कि ईश्वर अवतार ले सकते है।

समझ लीजिये कि इस बात के बारे मे केवल यह बिचार करना चाहिए कि ईश्वर मनुष्यो से सम्बन्ध रखते हैं या नही क्योकि मुख्य बात तो यही है। वे जो मानते कि मनुष्यगण न केवल ईश्वर की प्रजा

बरन उन की सन्तान है, कभी यह नहीं पूछेंगे कि ईश्वर संसार और तत्त्वों से सम्बन्ध रखते हैं या नहीं, वे अवश्य इस बात को दिल और जान से स्वीकार करेंगे। पर क्या सचमुच किसी के मन मे यह सन्देह उत्पन्न हो सकता है कि ईश्वर और मनुष्यों के बीच सम्बन्ध है या नही ? यदि वास्तव मे किसी प्रकार का सम्बन्ध न हुआ हो तो मैं समझता हूँ कि यह प्रश्न कभी हमारे मन में न उत्पन्न हुआ होता कि ईश्वर हैं या नही। यदि सचमुच है तो सम्बन्ध भी है क्योंकि जब तक कि किसी प्रकार का सम्बन्ध न होता तो हमारे ख़ियाल में भी ईश्वर नही आ सकते।

कभी लोग बतलाते कि हर एक प्रकार से ईश्वर मे और मनुष्य मे भिन्नता है अर्थात् जो गुण ईश्वर मे है सो मनुष्य मे नहीं पाये जाते है और जो जो गुण मनुष्य मे हैं सो ईश्वर में नही है। बार २ लोग मसीहियों पर यह दोष लगाते कि तुम-अहंकार में फंसकर और अपने तईं उत्तमोत्तम समझकर ईश्वर को भी एक मनुष्य समझते हो और ऐसा करते हुए ईश्वर की निन्दा करते हो। पर ऐसा कथन ठीक नही है हम ईश्वर को एक मनुष्य नही समझते हैं तौ भी हम यह तो कहते है कि ईश्वर मे और हम लोगों में अवश्य कुछ न कुछ समानता है, नही तो हम कैसे उनको जानें और कैसे उनकी आराधना करें, कैसे उन पर भरोसा रखें। यदि परमेश्वर हम से यहां तक न्यारे और भिन्न हों कि किसी प्रकार का सम्बन्ध हम से नही रखते हैं तो वे हमारे लिये वचन मात्र के ईश्वर हैं।

पर इस समस्त बखेड़े का क्या फल है, हम जानते ही तो हैं कि ईश्वर हम से सम्बन्ध रखते है और इस कारण नित यह बातें पूछते हैं कि ईश्वर हमे क्या आज्ञा देते हैं उन के साथ हम को कैसा बर्ताव करना चाहिये।

समझ लेना चाहिये कि ईश्वर के लिये अवतार लेना कोई अनहोनी बात नहीं है। क्या जिस पृथ्वी को उन्हो ने बनाया उसमे वे प्रवेश नहीं कर सकते क्या जिन मनुष्यो को उन्होने सृजा और पाला उनके बीच मे नही आ सकते या आने को प्रसन्न नही होवेगे ? पर विशेष करके हमारे लिये यह पूछना कि ईश्वर से यह हो सकता है या नही सब से बड़ी बात नहीं। हमे यह पूछना चाहिये कि ईश्वर ने क्या किया है ! उन्होने अवतार लिया या नही ! इन व्याख्यानो मे हम दिखलाना चाहते हैं कि ईश्वर ने तो अवतार लिया और ऐसा करते हुए हम लोगो के लिये मुक्ति का मार्ग तैयार किया है।

२—पर चन्द लोग कहते कि यदि अवतार लेने का अर्थ यह है कि ईश्वर मनुष्य मे आ बसे तो हम मान लेते है पर इस बात को भी ग्रहण कीजिये कि ईश्वर न केवल यीशु मसीह मे आ बसे थे बरन हर एक मनुष्य मे कम या अधिक वास करते हैं।

सावधानी के साथ इस बात का सोच विचार करना चाहिये। हम मान लेने को तैयार हैं कि संसार भर के सब वस्तुओ मे परमेश्वर एक अजीब प्रकार से उपस्थित है। उनकी शक्ति से वे उत्पन्न हुए हैं और उनके प्रबन्ध से वे विद्यमान है, पर संसार को ईश्वरमय नही समझना चाहिये। संसार मे ईश्वर का उपस्थित होना तो और बात है उसमें अवतार लेना दूसरी बात है। फिर हम इस बात को स्वीकार करते है कि मनुष्यो मे ईश्वर का उपस्थित होना आश्चर्य्य रीति से होता है। मनुष्य न केवल ईश्वर मे मानो जीते और चलते और स्वास लेते हैं, बरन मनुष्यो के आत्माओ और स्वभाओ में ऐसे गुण दिखलाई देते है जो न केवल ईश्वर के गुणो के परछाई हैं बरन ईश्वर ही के गुण दिखलाई देते है। निस्सन्देह पाप के कारण बहुत से लोगो मे वे मानो मिट गये है या मिट जाते हैं, पर चन्द लोगो मे वे

बहुत प्रकाशमान होते है तौ भी इस बात में और अवतार लेने मे बहुत अन्तर है। मनुष्य ईश्वर से कैसे ही भक्ति क्यो न रखे और उन को अपनी सारी अभिलाषाओ का स्वामी बनावे तौ भी वह यह नही कह सकता कि "मै और पिता (अर्थात् ईश्वर) एक हैं"।

कभी न भूलना चाहियें कि यह बात सर्वथा हमारी समझ से बाहर है कि अवतार ठीक २ किस प्रकार से हुआ, पर एक बात बहुत स्पष्ट दीखती है अर्थात् कि जैसे कि ईश्वर प्रभु यीशु मसीह मे विद्यमान थे वैसे दूसरे किसी मनुष्य मे विद्यमान नही हुए। पीछे हम उद्योग करेगे कि जहां तक बन बड़े यीशु मसीह की व्यक्तिता और विशेषता का निर्णय करें।

ईश्वर की मनसा नित प्रगट की जाती है पर अवतार की समाप्ति यीशु मसीह में हुई

हम आनन्द पूर्वक स्वीकार करते हैं कि न केवल यीशु मसीह के द्वारा वरन् नाना प्रकार से और बहुत से मनुष्यो के द्वारा ईश्वर ने कुछ न कुछ अपनी मनसा तो प्रगट की, पर अवतार लेकर उन्होने यीशु मसीह के द्वारा अपनी मनसा का प्रकाशित वाक्य समाप्त किया।

निस्सन्देह अविरहाम और मूसा और समूएल और दाऊद और यशैयाह इत्यादि नबियों के द्वारा ईश्वर ने अपनी मनसा प्रगट की और इस बात को मसीह ने स्वीकार किया पर मनसा प्रगट करना तो और बात है, अवतार लेकर अपने तईं दिखला देना और बात है।

फिर मैं मान लेता हूं कि और और देशो में और दूसरे दूसरे मनुष्यो के द्वारा ईश्वर ने कुछ न कुछ अपनी मनसा तो प्रगट की।

हमको यह नही समझना चाहिये कि—हिन्दुओ के धर्म्मशास्त्रो मे और क़ुरान मे और दूसरें दूसरे देशों के शास्त्रो मे जो जो बाते लिखी हुई हैं सब की सब मनुष्यो की बनाई हुई और निर्केवल ख़ियाली बाते है। ऐसा नही पर स्वीकार करना चाहिये कि ईश्वर ने बे कुछ न कुछ साक्षी दिये किसी देश के लोगो को नही छोड़ दिया है तो भी इन सब शास्त्रो मे बहुत मिलावट है। वे शास्त्र दूध के दूध नहीं बरन दूध और पानी मिलाये गये हैं और इस कारण बहुत ही ज़रूरत है कि कोई दूसरा अगुआ मिले और वह अगुआ यीशु मसीह है।

और फिर यह भी देख लेना चाहिये कि मनुष्यों के लिये न केवल शिक्षा चाहिये बरन एक सहायक और इस कारण ईश्वर के अवतार की आवश्यकता हुई। मनुष्यो को केवल गुरू नही बरन मुक्तिदाता चाहिये। मुक्ति के लिये मनुष्यो को न केवल ईश्वर की मनसा से जानकार होना चाहिये बरन एक सहायक भी जिसके द्वारा मनुष्य अपने पापो से बच सके और सचमुच धर्म्मी होकर ईश्वर की मनसा पूरी करने को सामर्थी बनें। और परमेश्वर ने यीशु मसीह के अवतार लेने और प्रायश्चित्त करने के द्वारा इस बात को सम्भव कर दिया है।

---

२ अध्याय

इन दो सिद्धान्तों का संकेत पुराने नियम में

यिहूदी मत और मसीही मत

इसमें तो कुछ सन्देह नही कि यिहूदी मत और मसीही मत आपस मे बहुत सम्बन्ध बरन संयोग रखते हैं। यह कथन तो उचित है कि मसीही मत तो यिहूदी मत की सम्पूर्णता है। मसीही मत मे यिहूदी मत ने अपने अभिप्राय की समाप्ति प्राप्त की है। यदि ऐसा हो और सचमुच तो है तो यह पूछना चाहिये कि पुराने नियम मे ईश्वर के अवतार लेने के बारे में कुछ वर्णन किया गया है या नही? और यदि किया गया हो तो वर्णन किस प्रकार का है?

पुराने नियम मे एक अजीब लक्षण है अर्थात् अपूर्णता, उसमे मानो कोई समाप्ति नही है। यिहूदी लोग नित किसी न किसी होनहार बात की बाट जोहते रहते थे। वे तो मान लेते थे कि परमेश्वर ने हमारे लिये बहुत से अनोखे काम किये है पर आसरा रखते थे कि वह दिन आवेगा जब कि ईश्वर हमारी उन्नति करेंगे और ऐसी ऐसी आशीसें हम पर उंडेल देगे कि जिनका पूरा बर्णन हो नही सकता।

आनेवाला सहायक

यिहूदियों के इतिहास के द्वारा मालूम होता है कि शुरू ही से वे आसरा रखते थे कि ईश्वर हमारे लिये एक सहायक चाहे वह नबी

या याजक या शूरवीर या नेता या राजा हो भेज देगे जिसके द्वारा हम अपने शत्रुओं और दुःखो से छुटकारा पाकर कुशल आनन्द के साथ रहेगे।

पर ध्यान देना चाहिये कि बहुत सी ऐसी प्रतिज्ञा दी गई थी जिनमे ईश्वर के अवतार लेने के विषय में एक अक्षर मात्र की चर्चा नही है।

मैं समझता हूँ कि अवतार लेने का सिद्धान्त जैसे कि हमारे बीच मे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा प्रचलित है सर्वथा नही था। स्मरण कीजिये कि यिहूदी लोग ईश्वर की त्रिएकता न मानते थे न जानते थे। जैसे कि आज कल मुसलमान लोग ईश्वर की एकता के बहुत अनुरागी होते हैं वैसे उन दिनो मे यिहूदी लोग कुछ न कुछ ऐसे ही थे और मैं समझता हूँ कि जहाँ उसी प्रकार की एकता लोगो की समझ में गड़ गई है वहाँ ईश्वर के अवतार लेने की शिक्षा शीघ्र नही बैठेगी। ईश्वर ने धीरे धीरे अपने भेदों को प्रगट कर दिया जैसे कि मनुष्य उनको ग्रहण करने के योग्य होते जाते थे और आश्चर्य्य की बात नही कि आरम्भ ही से ईश्वर ने त्रिएकता और अवतार लेने के भेद प्रत्यक्ष नही बतलाये।

पर यद्यपि कदाचित् किसी यिहूदी ने नही समझा कि ईश्वर उस विशेष रीति से अवतार लेगे जैसे कि वास्तव में यीशु मसीह के द्वारा हुआ तौ भी पुराने नियम में नाना प्रकार की बाते लिखी गई हैं जो केवल ईश्वर के अवतार लेने के द्वारा पूरी हो जाती हैं। मालूम होता ह कि ईश्वर अपने प्रवक्ताओ के द्वारा यिहूदियो को तैयार करते थे कि समय पर वे यह अजीब बात स्वीकार करने को तैयार होवें कि ईश्वर ने अवतार लिया और आप हमारे बीच मे साक्षात् होकर आये। चन्द ऐसी बाते भविष्यद्वक्ताओ की पुस्तको में

पाई जाती हैं जो इसी प्रकार की दिखलाई देती हैं । सम्भव है कि प्रवक्ता लोग ईश्वर की प्रेरणा के कारण बार बार ऐसी ऐसी आगामी बातों की चर्चा करते थे जिनका पूरा अर्थ वे आप नही समझते थे ।

आनेवाले मसीह के वर्णन

यह बात सम्भव नही है कि इन व्याख्यानो मे हम पुराने नियम की उन सब बातो का सोच करे जो आनेवाले मसीह से सम्बन्ध रखती थी । केवल उन बातो पर ध्यान देना चाहिये जो अवतार लेने और प्रायश्चित्त होने के बारे में कुछ संकेत देती हैं ।

आगमवाणी ।

स्मरण करना चाहिये कि बहुत सी आगम बाते है जो बतलाती हैं कि ईश्वर अपने लोगो की उन्नति करेंगे और उन के लिये एक सहायक या मसीह भेजेंगे पर इन सब ही बातों मे ऐसे २ वर्णन नही हैं कि हम उन के द्वारा समझ ले कि आनेवाले मसीह सचमुच ईश्वर के अवतार होंगे । और साथ इस बात के एक और है जो प्रायश्चित्त से सम्बन्ध रखती है अर्थात् पुराने नियम मे न केवल आगम बाते हैं वरन नाना प्रकार की रीतियां जो आनेवाली मुक्ति के बारे में संकेत देती थी । और फिर मैं आप लोगो को स्मरण दिलाता हूं कि बहुत सी बातें हमारे ही लिये यीशु मसीह के बारे मे बहुत प्रत्यक्ष दिखलाई देती हैं क्योंकि यीशु मसीह के आने के द्वारा उन का वर्णन किया गया है पर हम को यह नही समझना चाहिये कि पुराने नियम के दिनो में यिहूदियों को यह सब बाते ऐसी प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ती थी। मालूम होता है कि प्रवक्ता लोग पवित्रात्मा की प्रेरणा से न केवल दूरदर्शी हो जाते थे पर कभी उन बातों की आगमवाणी करते थे

जिनका पूरा अर्थ वे आप नही समझते थे। यिहूदी लोग ऐसे लोगों के पास ही पास रहते थे जो अनेक ईश्वरो को मानते थे और कदाचित् यही कारण है कि ईश्वर की त्रिएकता के बारे मे अधिक संकेत नही दिया जाता था।

निस्सन्देह प्रवक्ता लोग जानते थे कि आनेवाले प्रधान सहायक बड़े महान होगे। वे बतलाते थे कि वे "सर्वदा का याजक" होंगे जो मेलकीसेदेक के समान गिने जाएंगे (गीत ११० : ४)। वे यह भी दिखलाते थे कि मसीह एक बड़े नबी होगे जो मूसा के तुल्य होगे (विवाद० १८ : १५ ; प्रेरित० ३ : २२ ; ७ : ३७)

गीतो की पुस्तक मे (विशेष करके २, ४५, और ११० गीतों मे) ऐसे वर्णन दिये गये थे जिन से यह बात बहुत स्पष्ट दिखलाई देती थी कि आनेवाले मसीह अत्यन्त महान और श्रेष्ठ और आदरणीय होंगे। २ रे गीत मे वे मसीह और राजा और ईश्वर का पुत्र कहलाये गये है और बतलाया गया है कि वे अपने सब शत्रुओ पर जयमान होगे और पृथिवी भर के अधिकारी होगे। ४५ वे गीत मे भी उन के गुणो और श्रेष्ठता और प्रभुता का अजीब वर्णन है। ११० वे गीत मे न केवल वे याजक कहलाये पर मेलकीसेदेक के समान अपने शत्रुओ पर जयवन्त होकर एक बड़े राजा होगे।

यसअियाह ७ : १४ मे लिखा गया है कि कन्या से एक पुत्र पैदा होगा और उस का नाम "इम्मानुएल" कहा जायगा अर्थात् "ईश्वर हमारे साथ"। और फिर ९ : ६ मे उन के और और नाम रखे गये हैं अर्थात् "अद्भुत और युक्ति करनेहारा और पराक्रमी ईश्वर और अनन्तकाल का पिता और शान्ति देनेहारा हाकिम"।

इन सब बातो से यह बहुत प्रत्यक्ष मालूम होता है कि यद्यपि कदाचित् लिखनेवाले नही समझते थे कि ईश्वर आप अवतार लेंगे

तौ भी आनेवाले मसीह के गुणो और महानता के ऐसे २ बर्णन करते थे जो किसी साधारण मनुष्य में नही पाये जायंगे।

नियम का दूत

चन्द और बाते हैं जिन का सोच विचार बहुत सावधानी के साथ करना चाहिये। पुराने नियम में बार २ एक स्वर्गीय दूत की चर्चा है जो साधारण दूतो के तुल्य नही दिखाई देता है। उस मे ऐसी श्रेष्ठता और महानता प्रकाशमान हैं कि चन्द लोगों ने समझा है कि यह दूत मसीह था जो रूप धारण कर के साक्षात् हुआ। और सचमुच उस दूत के साक्षात् होने के बारे मे चन्द ऐसी बातो का बर्णन लिखा गया है जो किसी दूसरे स्वर्गीय दूत ही के गुणो के साथ फबता नही।

इस दूत की एक चर्चा है उत्पत्ति० ३२ : २४—३२। वहां वह "पुरुष" कहा गया पर मालूम होता है कि वह इस संसार का पुरुष नही था उस ने अपना नाम नही बतलाया पर याकूब ने उस स्थान का नाम (जहां वह उस पुरुष के साथ मानो मल्लयुद्ध करता था) "पनीएल" रक्खा (अर्थात् ईश्वर का मुख) क्योंकि याकूब ने कहा कि "परमेश्वर को आम्हने साम्हने देखने पर भी मेरा प्राण बच गया है"। जो हो सो हो पर यह बात तो साफ़ है कि याकूब ने समझा कि ईश्वर ही रूप धारण कर के मेरे पास आया था और मैंने ईश्वर ही को देखा।

यात्रा की पुस्तक मे भी (२३ : २०—२३) एक दूत की चर्चा है जो बड़ा अनोखा दूत दिखाई देता है। उस के बारे में ईश्वर कहते हैं कि "मैं एक दूत तुम्हारे आगे २ भेजता हूं जो मार्ग में तुम्हारी रक्षा करेगा, उस के सामने सावधान रहना और उस

की मानना (मान) उस का विरोध न करना क्योंकि वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा इस लिये कि उस मे मेरा नाम रहता है"। वास्तव मे यह दूत दूत से कही बढ़कर दिखलाई देता है।

मालूम होता है कि इस दूत की चर्चा फिर यहूशूअ (५:१३-१५) में पाई जाती है। वह "यहोवा की सेना का प्रधान" कहलाया गया। यहूशूअ ने उस के सामने दण्डवत की और उस प्रधान ने यहूशूअ से कहा कि "अपनी जूती पांव से उतार डाल क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है सो पवित्र है"। यह कौन सा दूत था जिसकी पूजा यहूशूअ ने की और जिस ने पूजा स्वीकार की। आप लोग स्मरण करते होंगे कि जब योहन एक दूत के सामने प्रणाम करना चाहता था दूत ने उस को बर्जा यह कहते हुए कि "ऐसा मत कर" "ईश्वर को प्रणाम कर"। यह बात अवश्य हमारी समझ में आवेगी कि यह "प्रधान" जो यहूशूअ के सामने साक्षात् हुआ सो दूत से कुछ बढ़कर था।

न्यायिओ की पुस्तक के १३ वे पर्व में फिर इस दूत या ऐसे दूत के प्रगट होने का बर्णन है। जब मानोह ने दूत से पूछा कि तेरा नाम क्या है दूत ने कहा कि "मेरा नाम तो अद्भुत है सो तू उसे क्यों पूछता है"? दूत के जाने के बाद मनोह ने कहा कि "हम ने परमेश्वर का दर्शन पाया है"।

यसअियाह ६३ : ९ मे अजीब प्रकार से ईश्वर की दया और अनुग्रह और प्रेम का बर्णन है, बतलाया गया है कि ईश्वर इस्राएलियों के दुःखो में आप दुःखित हुए और यह भी कहा गया कि "दूत के द्वारा वह प्रत्यक्षरूप होके उन का उद्धार करता गया" या "उस के मुख के दूत ने उन को बचाया"।

फिर मलाकी ३ : १ में इस दूत की चर्चा है वहां वह बाचा या नियम का दूत कहलाता है। बतलाया गया है कि अचानक वह दूत

मन्दिर में आवेगा प्रभु भी आवेगा और यहां लों इन दोनों के आने का बर्णन मिलाया गया है कि वे दोनो कुछ एक ही दिखाई देते हैं।

इस बाचा या नियम के दूत के द्वारा ईश्वर के अवतार लेने की आश्चर्य रीति की मानो आगमवाणी या परछाई हुई। ईश्वर के अवतार लेने के बारे मे अजीब प्रकार की तैयारी हो जाती थी। ईश्वर दिखलाते थे कि मैं किस रीति से मनुष्यो के साथ हमदर्दी करता हूं, हां उन के दुःखों में समभागी हूं। आत्मिक रीति से नित मनुष्य के साथ थे, इम्मानुएल थे—दूत के द्वारा कभी साक्षात् होते थे और इसी प्रकार से लोगो को प्रस्तुत करते थे कि अन्त में ईश्वर अवतार लेके उन के बीच मे साक्षात् होवेगे।

ईश्वर ही के आने की आगमवाणियां।

चन्द ऐसी आगम बाते है जिनमें न केवल यह बात बतलाई गयी कि ईश्वर किसी सहायक को भेज देगे पर यह कि ईश्वर आप आवेंगे। हम यह नही कह सकते कि इन बातों को पढ़कर यिहूदी लोग समझते थे कि उनका अभिप्राय यह है कि ईश्वर अवतार लेकर आवेंगे तौभी वे अवश्य उन प्रतिज्ञाओ पर सोचते हुए यह देखते थे कि किसी विशेष प्रकार से ईश्वर हमारे पास आनेवाले हैं।

कभी यह बतलाया जाता है कि कोई दूत आकर ईश्वर के आने के लिये तैयारी करेगा। जैसे कि यसअियाह ४०:३ "बन मे किसी की पुकार है कि यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे उसी परमेश्वर के लिये अराबा मे एक राजमार्ग समथर करो"। देखो भी मलाकी ३:१।

और बार बार यह सन्देश बहुत स्पष्टता से दिया गया था कि ईश्वर आप आवेगे। "देखो प्रभु यहोवा अपना सामर्थ्य दिखाता हुआ आता है और वह अपने भुजबल से प्रभुता कर लेगा"। यस-

अियाह ४० :१० । फिर "मत डरो देखो तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने को बल्कि ऐसे बदला लेने को आवेगा जो परमेश्वर के योग्य होवे"। यसअियाह ३५ :४ । हम देख चुके हैं कि मलाकी ३ :१ में ईश्वर का दूत या नियम का दूत ईश्वर ही कहलाया गया था और वैसे ही यसअियाह ९ : ६ मे आनेवाला सहायक "पराक्रमी ईश्वर और अनन्त काल का पिता" बतलाया गया था।

मालूम होता है कि यद्यपि यहूदी लोग कदाचित् ईश्वर के अवतार लेने की बाट नही जोहते थे जैसे कि हम अवतार समझते हैं तौभी वे अपने प्रवक्ताओ की आगमवाणियो के द्वारा ईश्वर के एक अजीब प्रकार के आने की बाट जोहते थे जो वास्तव मे यीशु के अवतार लेने के द्वारा पूरा हुआ।

आने वाला मसीह और प्रायश्चित्त होना।

यद्यपि प्रायः करके मसीह के आने का बर्णन ऐसे प्रकार से किया गया है कि वे पराक्रमी और सामर्थी होकर आवेगे और अपने लोगों को बचावेगे तौभी बार बार ऐसी बातो के साथ दूसरे प्रकार के बर्णन हैं जिनमे यह दिखलाया जाता है कि मसीह दुःख उठाकर लोगो के लिये मुक्ति प्राप्त करेंगे। यह लम्बी चौड़ी बात है और यहाँ इसका पूरा बर्णन नही हो सकता है। मालूम होता है कि जैसे कि वास्तव में हुआ वैसे आगमवाणियो मे ईश्वर के आने और उनके प्रायश्चित्त होने की चर्चा मिलाई गई है। चन्द यिहूदी लोग यह समझते थे कि दो मसीह आनेवाले हैं एक जो दुःखी और दूसरे जो ऐश्वर्यमान और जयमान होगे।

इस बात के बारे मे विशेष कर यसअियाह ५३ और ६३ वें पर्वों को देख लीजिये।

ईश्वर के बारे में मनुष्यों के गुणों का वर्णन।

यहाँ एक बात का कुछ अधिक विचार करना चाहिए जिसके विषय में बहुत से लोगों ने ठोकर खायी है। वे कहते हैं कि पुराने नियम की पुस्तकों के लेखक ईश्वर के बारे में बहुत से ऐसे गुण बतलाते जो सचमुच ईश्वर के नही हो सकते है पर केवल मनुष्य के गुण हैं। और कदाचित् लोग ऐसा कहते होगे कि हमको चाहिए कि ऐसे सब बर्णनों को उपमा समझना चाहिये क्योंकि मनुष्य मे ईश्वर के गुण नही पाये जाते हैं न तो ईश्वर अवतार ले सकता है। यह बात बहुत सोच विचार करने के योग्य है। पहिले पहिल यह तो मान लेना चाहिये कि बैबल मे जब परमेश्वर के स्वभाव और गुणो का बर्णन किया जाता है बहुत सी उपमाएँ काम मे ली जाती हैं। हम मनुष्य होकर कैसे ईश्वर की ईश्वरता को पूरे प्रकार से समझ सकते या वर्णन कर सकते हैं? जब हम ईश्वर के बारे मे कुछ कहा करते हम नाना प्रकार के शब्द काम मे लाते हैं जो वास्तव मे ईश्वर के गुणों के वर्णन करने के योग्य नही किन्तु मनुष्यो के गुणो के बर्णन करने के योग्य है। पर हम क्या करे? लाचार होकर हम ऐसा करते हैं क्योंकि हमारे पास वेही शब्द नही हैं जो उचित रीति से ईश्वर के स्वभाव और गुणो को बतला सकते हैं। हम मान लेते हैं कि ईश्वर की ईश्वरता की पूर्णता हमारी समझ से बाहर है और यदि बात ऐसी है तो हम कैसे उस बात का बर्णन कर सकते जो हमारी समझ में नही आ सकती है? हम स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर को हाथ नही उनको आँख नही हैं वे पश्चात्ताप नही करते और क्रोधित नहीं होते जैसे कि हम क्रोधित हो जाते है। यीशु मसीह ईश्वर का पुत्र कहलाया जाता है पर वह सम्बन्ध जो पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु

मसीह के बीच होता है वही सम्बन्ध नही है जो इस संसार में पिता और पुत्र के बीच होता है। निस्सन्देह बैबल के रचयिता और हम उपमा लेकर ईश्वरीय बातो का बर्णन करते हैं और ऐसा करते हुए मान लेते हैं कि हम वास्तविक प्रकार से नही पर केवल अपनी सामर्थ्य और बुद्धि के अनुसार ईश्वर के गुणो का बर्णन करते हैं।

तौभी स्मरण करना चाहिये कि ऐसा ही करना पड़ता है या मौन गह कर चुप चाप बैठे रहना पड़ता है। यदि हम कहे कि ईश्वर निर——निर——निर है ईश्वर तो यह नही वह नही न इसके समान न उसके समान वह अगोचर है तो कुछ ज्ञान नही हुआ है। तब ईश्वर हमारे लिये केवल नाम मात्र हो गया है पर सचमुच नाम ही नही है क्योकि जब तक कि नाम का कुछ अर्थ नही रखता है वह केवल एक अनर्थक शब्द है।

पर इन सब बातो को स्वीकार करके हम कहते हैं कि यद्यपि हम पूर्णता से ईश्वर को नही जान सकते तौभी हम कुछ जान सकते हैं और हम मनुष्य होकर ऐसे गुण रखते जिनके द्वारा हम ईश्वर के चन्द गुणो को कुछ न कुछ समझ सकते हैं। ईश्वर का न्याय ईश्वर की दया ईश्वर का अनुग्रह ईश्वर का प्रेम हमारे न्याय और दया और अनुग्रह और प्रेम से अत्यन्त उत्तम हैं तौभी वे उसी ही प्रकार के गुण हैं और मनुष्यो के ऐसे गुणो के द्वारा हम ईश्वर के गुणो को कुछ जान सकते हैं। और कारण इसका तो यह है कि ईश्वर और मनुष्यो के बीच विशेष सम्बन्ध है, हम ईश्वर की सन्तान हैं। ईश्वर सब वस्तुओ से और सब जीवो से सम्बन्ध रखते हैं वरन जीवात्माओ से आत्मिक सम्बन्ध रखते है। "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार सिरजा" हम ईश्वर के समान नही है, पाप के कारण हम ईश्वर से दूर हो गये हैं, हम अपनी बुद्धि दौड़ा दौड़ा कर ईश्वर को मानो नहीं

पकड़ सकते तौभी इस अजीब प्रकार के सम्बन्ध के कारण हम सर्वथा ईश्वर से परे नहीं, पर मानो उनका कथन समझ सकते और उनके चन्द ख़याल भी ख़याल कर सकते है।

ईश्वर ने हम को सृजा ईश्वर हमारे पालक पोषक हैं ईश्वर ही मे हम जीते रहते हैं और अपने आत्मा से वे हम में साक्षी देते और हम मे बास करने को तैयार है। तो क्या यदि वह अनुग्रह कर के अपनी ईश्वरीय शक्ति और महिमा छोड़कर हमारी मुक्ति के लिये हमारे बीच मे आवें तो यह कोई अनहोनी बात है! कभी नही। जो ईश्वर की पवित्रता और दया और श्रेष्ठता के विरुद्ध न होवे सो परमेश्वर अपने लोगो के लिये करने को प्रस्तुत होवेगे और अवतार लेने का कोई रोक टोक नही है।

जब हम अवतार लेने के बारे में सोच विचार करें तो बहुत ही उचित है कि हम दीन हीन और नम्रमन होकर ईश्वर ही की नियत बरन की हुई बात स्वीकार करने को तैयार होवें। चन्द लोग मानो यह कहते कि ईश्वर को अवश्य यह करना चाहिये वह करना चाहिये या इसी प्रकार या उसी प्रकार करना उचित है। वे मानो अपने तई ऐसे बुद्धिमान समझते हैं कि वे बतला सकते कि ईश्वर ज़रूर यह या वह करेगे या इसी या उसी रीति से। और यह भी बतलाते कि उन्हों ने ऐसा या वैसा किया होगा। पर ईश्वर की बुद्धि और पराक्रम और अनुग्रह और करुणा की सीमा हमारी दृष्टि और समझ से परे है। लोग बतलाते हैं कि अमुक करनी परमेश्वर की महानुभावता मे हानि पहुँचावेगी या त्रुटि डालेगी। बहुधा यह बात दिखलाई देती है कि मुसलमान और हिन्दू भी यीशू मसीह के बारे मे यह पेश करते है कि अमुक अमुक बात ईश्वर के सच्चे अवतार को नही फबती है और सावधानी से देखिये कि अधिक करके वे ऐसी बाते पेश नही

करते हैं कि जिन में पाप या बुराई का स्वाद है पर ऐसी बाते जिन के कारण (उनकी समझ मे) ईश्वर की महिमा और महानता मे कुछ त्रुटि पाई जाती है।

हमे यह नहीं चाहिये कि पहिले पहिल हम अपने मनो में ठहरावे कि मनुष्यो को मुक्ति देने के लिये परमेश्वर को क्या करना चाहिये और बाद इस के योशू मसीह के अवतार का जीवन चरित इस के साथ मिलान करना पर हमे चाहिये कि नम्रता और दीनता पूर्वक सुसमाचारो को लेकर यीशू मसीह का वृत्तान्त पढे और आश्चर्यित होकर स्वीकार करे कि महान परमेश्वर ने हमारी मुक्ति के लिये दुःख और दरिद्रता और दीनता स्वीकार किये बरन मर भी तो गये कि हम मरनहार मनुष्य अनन्त जीवन के अधिकारी बने।

जब तक कि अवतार मे पाप और बुराई का लवलेश नही दिखलाई देते तब तक हम इस कारण उन को अस्वीकार न करेगे कि वे अपनी बड़ाई और प्रतिष्ठा और सुख की चिन्ता दूर कर के हमारे लिये दु.ख और संकट और अनादर और तिरस्कार सहने को प्रस्तुत हुए।

अध्याय ३

ईश्वर के पुत्र का अवतार लेना।

इस सिद्धान्त के प्रमाण।

ईश्वर के पुत्र के अवतार लेने के प्रमाण नये नियम मे पाये जाते हैं। समय समय पर इन प्रमाणों के नाना प्रकार के बर्णन किये गये हैं और सम्भव है कि उन बर्णनो के द्वारा हमें बहुत सहायता मिल सकती है। पर स्मरण करना चाहिये कि यह सब बातें प्रमाण नही हैं और किसी प्रकार का अधिकार नहीं रखती हैं। जहां तक वे उचित और नये नियम की शिक्षा के अनुसार ठीक और यथार्थ दिखाई देती हैं वहां तक हम उनको स्वीकार करने को तैयार हैं पर बे पूछे पाछे हम उन को ईश्वरीय प्रमाण नही समझते हैं।

एक एक बात के बारे में यह पूछना चाहिये कि वास्तव मे यह शिक्षा चारो सुसमाचार और नये नियम की पत्रियो की शिक्षा से मिलती है या नही। चौकस रहना चाहिये कि ख़ियाली बातें ईश्वरीय प्रमाण नही गिनी जाएं।

नये नियम के प्रमाण एक प्रकार के नहीं हैं।

सावधानी से यह भी स्मरण करना चाहिये कि नये नियम मे सब प्रमाण एकही प्रकार के नही हैं।

१—पहिले पहिल देखना चाहिये कि प्रभु यीशु ने आप इस बात के बारे मे क्या २ शिक्षा दी।

२—फिर सुसमाचारो मे उन बातो पर ध्यान देना चाहिये जो यीशु मसीह के कथन नही पर उनके चेलो के और सुसमाचारो के रचयिताओ के हैं।

३—फिर सोच विचार करना चाहिये कि जो २ बाते प्रेरितो ने कहीं या लिखी वे यीशु मसीह के जीते जी उनके ख़ियाल या ऐसे ख़ियाल जो मसीह के स्वर्ग पर चढ़ने के बाद उनके मनो मे गड़ गये।

४—फिर न केवल यीशु मसीह के और उनके प्रेरितो के वचनो पर ध्यान देना चाहिये पर उन सब घटनाओ पर जिनका वर्णन सुसमाचारो मे लिखा गया है।

५—पावल की पत्रियां इन सब बातों से कुछ न कुछ अलग हैं क्योंकि पावल यीशु मसीह के जीते जी प्रेरित नही था।

६—इब्रियो को पत्री का रचयिता उन सब से फिर अलग है।

७—योहन के लेख एक प्रकार दूसरे लेखो से पृथक् है। योहन तो प्रेरित था पर मालूम होता है कि उस के लेख उस के बुढ़ापे मे लिखे गये थे और इस कारण जो कुछ उसने लिखा सो कदाचित् वही बाते नही हैं जो यीशु मसीह के जीते जी उसके मन में जम गयी पर वे जो बहुत सोच विचार करने के बाद उसने समझ ली। यह बात न केवल प्रकाशित वाक्य और उसकी तीन पत्रियो के बारे मे सच है पर उसके सुसमाचार से भी कुछ सम्बन्ध रखती है। उसके सुसमाचार की भूमिका यह नही दिखलाती है कि पहिले पहिल योहन ने यीशु मसीह के बारे मे ऐसा सोच विचार किया पर यह कि पवित्रात्मा की सहायता से उसने बहुत दिनो के बाद सोच विचार करते करते अपने स्वामी के विषय मे क्या निर्णय किया।

बहुत ही उचित है कि इन सब बातो पर ध्यान देना चाहिये क्योकि मालूम होता है कि एक बारगी अवतार लेने का सिद्धान्त

प्रेरितो को प्रकाशमान नही होता था पर धीरे २ वे समझने लगे कि हमारे स्वामी कौन और कैसे थे। और दीनता और नम्रता पूर्वक यह भी समझ लीजिये कि सम्भव है कि ईश्वर के पुत्र अवतार लेकर और वास्तविक अर्थात् हक़ीक़ी मनुष्य होकर आपही पहिले पहिल नही समझते थे कि जन्म लेने से पहिले मैं पूर्ण ईश्वरता रखता था। कदाचित् कोई न कोई ऐसी बात सुनते ही आश्चर्य्यित होवेगा पर फिर सावधानी के साथ इस बात को याद कीजिये कि अवतार लेते हुए मसीह ने बहुत दीनता स्वीकार की और सम्पूर्ण ईश्वरता साथ लेके नही आये। पर इस बात के बारे में हम पीछे फिर सोच विचार करेगे।

यीशु मसीह सचमुच मनुष्य थे।

चन्द लोग यहां तक यीशु मसीह की ईश्वरता में मग्न रहते हैं कि वे भूल जाते है कि उसका प्रेम इसमें प्रगट हुआ कि मसीह हमारे लिये वास्तविक मनुष्य हुए। पावल ने फ़िलिपियो को लिखते हुए अजीब प्रकार से मसीह के दीनता को स्वीकार करने का वर्णन किया है। वह पढ़नेहारो को बतलाता था कि हमको बहुत ही ज़रूर है कि घमण्ड से बचे रहे वह यह लिखता है कि (देखो २ : ३) टंटा करके और झूठी प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये कुछ मत करो परन्तु दीनता से एक दूसरे को अपने से बड़ा समझो। और तब यीशु मसीह को एक आदर्श बनाकर लिखता है कि तुम्ही में वही मन होवे जो ख्रीष्ट यीशु मे भी था जिसने ईश्वर के रूप में होते हुए ईश्वर के तुल्य होना ऐसी वस्तु को नही समझा जो अवश्य पकड़ा जाए पर अपने तई शून्य (या ख़ाली) करके दास का रूप धारण किया और मनुष्यो के समान बना और मनुष्यों के से डौल पर पाया जाकर अपने को दीन किया और मृत्यु लों हां क्रूश की मृत्यु लों आज्ञाकारी रहा।

"अपने तईं शून्य किया" इसका क्या अर्थ है? मैं समझता हूँ कि इस का अर्थ कुछ न कुछ यह है कि यद्यपि मसीह ईश्वरीय स्वभाव रखते हुए हमारे बीच मे रहे तौ भी वे अपनी महिमा और चन्द ईश्वरीय गुणो को जैसे कि सर्वज्ञता और सर्वसामर्थ्यता को छोड़कर हमारे बीच आ रहे। ईश्वर के तुल्य वे तो पहिले ही थे तौ भी हमारे लिये मनुष्य हो गये।

इब्रियो की पत्री भी सावधानी से पढ़ लीजिये विशेष करके २ : १७, १८; ४ : १५; ५ : ७-९। पत्री का रचयिता इस बात को बहुत स्पष्ट रीति से दिखलाता है कि यीशु मसीह सचमुच मनुष्य हुए। दूसरे मनुष्यों मे और मसीह में एक बड़ा अन्तर था अर्थात् उसमें पाप का लेशमात्र नही पर इस बात को छोड़ यीशु मसीह मनुष्यो के समान हो गये।

योहन जो दूसरे लेखको की अपेक्षा यीशु मसीह के स्वभाव और व्यक्तिता के बारे में अधिक लिखता है दो तीन प्रकार से मसीह की मनुष्यता के विषय मे लिखता है। "यीशु ख्रीष्ट शरीर मे आया है" (१ योहन ४ : २) (यूनानी शब्द का ठीक २ अर्थ तो शरीर नही बरन मांस है)।

योहन १ : १४ बहुत सोच बिचार करने के योग्य है वहां लिखा है कि "बचन शरीर हुआ (या मांस हुआ) और हमारे बीच मे डेरा किया और हमने उसकी महिमा पिता के एकलौते की सी महिमा देखी और वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था"। मालूम होता है कि यहां वह सिखलाता है कि शारीरिक प्रकार से मसीह सचमुच मनुष्य हुआ। ठीक २ उलथा यह नही है कि वह देहधारी हुआ पर शारीरिक हुआ या शरीर या मांस हुआ (देखो इब्रि० २ : १४ जहां बतलाया गया है कि वह मांस और लोहू का भागी हुआ)। मालूम

होता है कि योहन यह बतलाना चाहता था कि मसीह ने न केवल मनुष्य का रूप धारण करके अपने तईं मनुष्य दिखलाया परन्तु हमारे मांस और लोहू में समभागी होकर वास्तव मे मनुष्य हुआ। और ध्यान देना चाहिये कि जब योहन मसीह की महिमा के बारे में कुछ कहता तो सर्वज्ञता और सर्वसामर्थ्यता इत्यादि की चर्चा नही है पर अनुग्रह और सच्चाई की। यह बात हम नही स्वीकार कर सकते कि मसीह ने अवतार लेकर अपनी ईश्वरीय आत्मिक प्रकृति या स्वभाव छोड़ दिया पर वह नाना प्रकार के अधिकार छोड़ सकते थे ऐसा करने से ईश्वर की महिमा में कुछ त्रुटि या न्यूनता या हानि नही होती पर उनके निरुपम अनुग्रह और करुणा प्रगट हुई।

अब सुसमाचारो मे देखना चाहिये और जहां तक बन पड़े निर्णय करना कि घटनाओ के द्वारा यह बात प्रकाशित होती है कि हमारे स्वामी ने वास्तव मे मनुष्यो की दशा और अवस्था स्वीकार की या नही।

इस बात का अधिक बर्णन नही करना चाहिये कि शारीरिक बातों मे यीशु मसीह हमारे साझी हुए। बचपन ही मे वे बालक थे और सयाना होकर निर्बलता का स्वाद चखते थे। चलते २ या काम करते करते २ वे थक जाते थे वे भूखे और पियासे होते थे अन्त में वे मर भी गये। पर अधिक करके इस बात का बिचार करना चाहिये कि दूसरी २ बातो मे वे हमारे समभागी हुए या नहीं। इस बात का यह उत्तर है कि हां हुए। लूक लिखता है (२ : ५२) कि बचपन में "यीशु बुद्धि और डौल डौल में बढ़ता था और ईश्वर का और मनुष्यो का अनुग्रह उस पर बढ़ता गया। वे कभी आनन्दित * कभी शोकित † होते थे वे आश्चर्य्यित हुए ‡। वे परीक्षित हुए।

* योहन ११ : १५; लूक १० : २१।
† योहन ११ : ३५; मत्ती २६ : ३८।
‡ मत्ती ८ : १०, मार्क ६ : ६।

इन बातों पर ध्यान देते हुए देखभाल कर और सावधान होकर चलना चाहिये । ऐसा न हो कि हम अपने स्वामी का अनादर करें और ऐसा न हो कि हम उनका आदर करने के मिस से सुसमाचारों की साक्षी झुठलावें ।

मैं जानता हूँ कि चन्द मसीह समझते हैं कि यीशु मसीह यहां रहते हुए सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी थे और इस बात को प्रमाणिक ठहराने के लिये कहते हैं कि देखिये उन्होंने कैसे २ आश्चर्य्यकर्म्म किये और ऐसी २ बाते बतलाते थे जो मनुष्यों की समझ और ज्ञान से बाहर हैं पर स्मरण भी कीजिये कि नबियो ने ऐसी २ बाते कही और प्रेरितो ने ऐसे २ आश्चर्य्यकर्म्म किये । यीशु मसीह ने आप (योहन १४ : १२) कहा कि "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करे जो काम मैं करता हूँ उन्हे वह भी करेगा और इन से बड़े काम करेगा क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ" । मुझे मालूम है कि इसके उत्तर मे लोग कहते हैं कि हां प्रेरितों ने आश्चर्य्यकर्म्म तो किये किन्तु यीशु मसीह के नाम और शक्ति के द्वारा पर यीशु मसीह ने अपनी ओर से किया । "अपनी ओर से" ? यीशु मसीह ने क्या कहा ? देखो योहन १४:१० "जो बाते मैं तुम से कहता हूँ सो अपनी ओर से नही कहता हूँ परन्तु पिता जो मुझ मे रहता है वही इन कामो को करता है"। फिर (योहन ८:२८,२९) "मैं आप से कुछ नहीं करता हूँ परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया तैसे मैं यह बातें बोलता हूँ" । फिर (योहन ५ : १९ और ३०) "मैं तुम से सच सच कहता हूं कि पुत्र आप से कुछ नही कर सकता है" "मैं आप से कुछ नही कर सकता हूँ" । पीछे हम देख लेगे कि योहन के इस ५ वें पर्व मे यीशु मसीह की ईश्वरता का अजीब प्रमाण है पर यहां केवल इस बात पर ध्यान करना चाहिये कि मसीह इस जगत मे रहते हुए सचमुच मनुष्य हो

कर रहे और वे आप से नही बरन अपने स्वर्गीय पिता की ओर से सब कुछ किया करते थे। और इस बात को न भूलिये कि जिस सुसमाचार में (अर्थात् योहन के सुसमाचार में) यीशु मसीह की ईश्वरता की अधिक चर्चा है उसी सुसमाचार में इस बात की अधिक चर्चा है कि प्रभु आप से कुछ नही करते थे पर अपने पिता की ओर से सब कुछ कहते और सब काम करते थे।

सोच बिचार कीजिये कि क्या वह जो सर्वज्ञानी है सो आश्चर्य्यित हो सकता है ? आश्चर्य्य कब होता है ? जब कि कोई बात होती जिसकी बाँट हम नही जोहते थे या जब कि कोई बात जिस के होने की आसरा हम रखते थे नही होती है। आश्चर्य्य सर्वज्ञानी का गुण नही है।

फिर क्या सर्वज्ञानी की परीक्षा हो सकती है ? कदाचित् कोई यह नही मान लेगा कि ईश्वर की परीक्षा हो सकती है तौ भी यीशु की परीक्षा तो हुई। इब्रियो को पत्री के लेखक की समझ में हमारे प्रभु की निर्बलता के द्वारा एक अनोखी योग्यता प्राप्त हुई जिसके कारण वे हमारे सहायक हो सकते हैं और हो भी गये हैं।

पावल ने लिखा है (२ करिन्थ० ८:९) "तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह जानते हो कि वह जो धनी था तुम्हारे कारण दरिद्र हुआ कि उसकी दरिद्रता के द्वारा तुम धनी होओ"। ईश्वर का पुत्र सनातन से धनाढ्य तो थे तौ भी उन्होंने हमारे लिये दरिद्रता स्वीकार की। समझ लीजिये कि जहाँ तक हम इस बात को ग्रहण करते वहाँ तक हम अपने स्वामी के अनुग्रह की बड़ाई पहचानते। चन्द लोग मानो मसीह को दरिद्रता से बचाना चाहते हैं पर ऐसा करते वे उनके अनुग्रह में एक प्रकार की दरिद्रता डाल देते। मसीह ने आप दरिद्रता अर्थात् निर्बलता—वास्तविक मनुष्यता—स्वीकार

की। ईश्वर के पुत्र यहाँ लो महान थे कि मनुष्यो की मुक्ति प्राप्त करने के लिये वे उनकी दुर्दशा मे साझी होने को तैयार हुए और ऐसा करते हुए उनकी ईश्वरता मे किसी प्रकार की त्रुटि नही पड़ी" पर उनकी महिमा की महानुभावता अत्यन्त प्रकाशमान हुई।

याद रखिये कि यहाँ हमारा अभिप्राय यह नही है कि हम इस बात पर प्रमाण दें कि प्रभु तो ईश्वर नही थे किन्तु यह कि वे सच-मुच मनुष्य हुए। न केवल देखने मे किन्तु वास्तव मे। हम पीछे देख लेगे कि नाना प्रकार से यह बात साबित होती है कि मसीह ईश्वर तो थे। हमारे लिये यह दूसरी बात स्वीकार करना कठिन है कि ईश्वर अवतार लेकर मनुष्य की दरिद्रता स्वीकार कर सकते थे। बार बार इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि निर्बलता और अल्प-ज्ञता मे पाप नही और मालूम होता है कि एक बात को छोड़ कर अर्थात् पाप को प्रभु यीशु हमारी मनुष्यता मे समभागी हुए।

यीशु मसीह ने आप मान लिया था अपने दूसरे आने के बारे में कि "उस दिन और उस घड़ी के विषय मे न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्गवासी दूत गण और न पुत्र परन्तु केवल पिता"। और चन्द दूसरी बातो के बारे मे मालूम होता है कि मसीह सर्वज्ञानी नही थे। क्या पहिले पहिल मसीह ने जान बूझ कर बारह प्रेरितो को चुनते हुए एक को चुन लिया जो अन्त में बड़ा ही पापी निकला? नही नही धीरे धीरे यह बात प्रगट होती थी कि यिहूदा चोर और कपटी है।

मान लेना चाहिये कि नाना प्रकार की घटनाओं मे मसीह ऐसा ज्ञान दिखलाते थे और ऐसी शक्ति भी दिखलाते थे जो मनुष्य के स्वाभाविक ज्ञान और शक्ति नही थे। पर नबियो और प्रेरितो के बारे मे यह कहा जा सकता है। मालूम होता है कि मसीह इस कारण यह शक्तियाँ नही दिखलाते थे कि वे सम्पूर्ण ईश्वरीय गुणों को साथ

लेकर अवतार लिये थे पर इस कारण कि अवतार लेकर और वास्तविक मनुष्य होकर वे नित अपने स्वर्गीय पिता पर भरोसा रखते थे और उनकी ओर से हर प्रकार की शक्ति और ज्ञान और गुण प्राप्त करते थे जो उनके काम के लिए ज़रूर थे।

यीशु मसीह सचमुच ईश्वर थे

अब आनन्द पूर्वक मैं दूसरी बात पर आप लोगो का ध्यान दिलाता हूँ अर्थात् हमारे प्रभु यीशु के ईश्वरत्त्व पर।

सुसमाचारों को पढ़ते पढ़ते अवश्य यह ख़ियाल हमारे दिलो में आवेगा कि यह यीशु स्वामी मनुष्य तो हैं पर मनुष्य से भी कुछ बढ़ कर मालूम होते हैं। न केवल उनमे पाप का लेशमात्र नही दिखलाई देता है पर वे किसी बचन या संकेत से यह नही दिखाते थे कि कि मैं अपने तईं पापी समझता हूँ या अपने स्वर्गवासी पिता से क्षमा माँगता हूँ। "तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है?" (योहन ८:४६)। "मेरा भेजनेहारा मेरे संग है। पिता ने मुझे अकेला नही छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वही करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है" (योहन ८:२९)। क्या मसीह को छोड़ कर कोई दूसरा मनुष्य यह कह सकता कि हे ईश्वर नित मैं सदा वही करता हूँ जिससे आप प्रसन्न होते होंगे?

फिर मसीह मे एक अजीब प्रकार का अधिकार दिखाई देता है। जब पर्वत पर बैठ कर प्रभु उपदेश देते थे तो अध्यापकों की नाईं वे यह नही कहते थे कि अमुक रब्बी ने यह कहा अमुक ने वह, पर "मैं कहता हूँ"। "तुमने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि नरहिंसा मत कर...... परन्तु मैं तुम से कहता हूँ" (देखो मत्ती ५:१८, २०, २२, २८, ३२, ३४, ३९, ४४)। निस्सन्देह यह गुरु

अध्यापकों की नाईं सुनी सुनाई नही सुनाते बरन अधिकार के साथ शिक्षा देते थे । क्या कोई साधारण मनुष्य या कोई नबी यह बात कहेगा कि "मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक लोप करने को आया हूँ, मैं लोप करने को नहीं परन्तु पूरा करने को आया हूँ" ? ।

फिर देखिये कि प्रभु किस रीति से लोगों को अपने पास बुलाते थे कि वे उनही पर विश्वास करे "हे तुम सब जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम देऊँगा" ।

फिर हम अवश्य यह पूछेंगे कि "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करते हैं ?

मसीह अधिकारी होकर मनुष्यों को अपने चेले बनाते थे "मेरे पीछे हो ले" "यदि कोई मेरे पास आवे और अपनी माता और पिता और स्त्री और लड़को और भाइयों और बहिनो को हॉ और अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा शिष्य नही हो सकता है" (लूक १४:२६) ।

मत्ती का १० वॉ पर्ब पढ़िये । यीशु मसीह कोई ऐसी बात नहीं कहते कि जिससे यह मालूम होवे कि यीशु और उनके चेले अधिकार मे किसी प्रकार से समान थे या कि चन्द दिनो के बाद चेले गुरू हो जाएँगे और अपने स्वामी यीशु के तुल्य होवेंगे । यीशु मसीह बतलाते थे कि मेरे नाम ही के कारण से लोग तुमको सतावेंगे तौ भी सह लेना चाहिये "जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेगा उसे मै भी अपने स्वर्गवासी पिता के आगे मान लेऊँगा" "जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नही आता है सो मेरे योग्य नही" (मत्ती १०:३३, ३८) जो ऐसी ऐसी बाते कहता सो या तो अत्यन्त अभिमानी है या अजीब प्रकार का अधिकार रखता होगा ।

फिर देखिये कि न्याय के दिन के बारे मे मसीह कैसी कैसी शिक्षा देते थे। वे बतलाते थे कि मै न्यायी होऊँगा। "क्योंकि पिता किसी का बिचार नही करता परन्तु उसने बिचार करने का सब अधिकार पुत्र को दिया है इसलिये कि सब जैसे पिता का आदर करते हैं पुत्र का आदर करे" (योहन ५ : २२, २३)। और यह शिक्षा भी दी गई है कि यीशु मसीह के विश्वासी हीं उसी दिन बच जाऍगे "पिता पुत्र को प्यार करता है और उसने सब कुछ उसके हाथ में दिया है जो पुत्र पर विश्वास करता है उसको अनन्त जीवन है पर जो पुत्र को न माने सो जीवन को न देखेगा परन्तु ईश्वर का क्रोध उसपर रहता है" (योहन ३ : ३५, ३६) यह बातें मसीह की नही हैं वे कदाचित् योहन की हैं पर मालूम होता है कि वे यीशु मसीह की शिक्षा बतलाती हैं।

इसमें सन्देह नही कि यीशु ने समझा कि मैं अपने स्वर्गीय पिता से ऐसा सम्बन्ध रखता हूँ जो कोई दूसरा मनुष्य नही रखता है। यीशु अपने चेलों के साथ बात चीत करते हुए अपने पिता के बारे मे कभी यह नही कहते "हमारा पिता" पर "मेरा पिता और तुम्हारा पिता"। उन्हो ने कहा "पुत्र को कोई नही जानता है केवल पिता और पिता को कोई नही जानता है केवल पुत्र और वही जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे" (मत्ती ११ : २७) फिर "यह नही कि किसी ने पिता को देखा है केवल जो ईश्वर की ओर से है उसी ने पिता को देखा है" (योहन : ६, ४६)। फिर उन्हो ने कहा कि "क्या तू प्रतीत नही करता कि मैं पिता मे हूँ और पिता मुझ में है जो बाते मैं तुम से कहता हूँ सो मैं अपनी ओर से नही कहता परन्तु पिता जो मुझ मे रहता है अपने काम करता है" (योहन १४:१०) और "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है" (योहन १४:९)। फिर "मैं और पिता एक हैं" (योहन १० : ३०)। फिर देखिये (योहन ५, १९, ३९)

इन सब बातो पर बिचार करते करते हम क्या समझेंगे ? वे पिता के आधीन थे तौभी पिता के साथी हां यहाँ लो कि वे कह सकते थे कि "मैं और पिता एक हैं"।

यीशु—मनुष्य और ईश्वर।

यह बात समझना—अर्थात् कि यीशु वास्तव मे मनुष्य थे तौभी ईश्वर थे—हमारे लिये बहुत कठिन है बरन हमारी समझ से बाहर है। हम क्या करेगे ? दोनो को स्वीकार करना चाहिये क्योंकि दोनो वास्तविक और यथार्थ हैं। मण्डली मे बहुत हानि का एक यह कारण हुआ कि लोग चेष्टा करते हैं कि इन दो बातो को मिलान करें और करते हुए या तो यीशु की मनुष्यता या उनकी ईश्वरता को छोड़ देते हैं।

अब एक और बात पर बिचार करना चाहिये। अपनी और अपने पिता की एकता कब प्रभु यीशु को निश्चित हुई ? बचपन मे या बपतिसमा लेते समय या कब ? इस प्रश्न का उत्तर कौन दे सकता है ? मैं जानता हूँ कि बचपन मे नही हुई होगी तौभी उन दिनो मे वे अपने स्वर्गवासी पिता परमेश्वर से अजीब प्रकार का प्रेम रखते थे। पर कोई ऐसी बात नहीं लिखी है जिससे हमको मालूम होवे कि वे दस बारह बरस के लड़के होकर यह समझते थे कि मैं परमेश्वर का अवतार हूँ। सम्भव है कि काम करते करते इस बात का अधिक निश्चय होता जाता था कि मुझ मे न केवल ईश्वर की प्रेरणा नित बास करती है बरन ईश्वर भी मुझ मे बास करते जैसे कि कभी दूसरे किसी मनुष्य में नही बास करते थे। तौभी जब तक कि यीशु मृतको मे से फिर जी नही उठे बरन जब तक कि स्वर्ग मे फिर नही चढ़ गये तब तक ईश्वरत्व की सम्पूर्णता उनमे प्रकाशमान नही हुई, मनुष्यता की दशा मे होकर मनुष्यता के व्यवहार और अनुभव सहना और भोगना पड़ा।

प्रभु यीशु की उस बात पर बार बार सोच बिचार करना चाहिये जो योहन १७.५ मे पाई जाती है "हे पिता तू अपने संग उस महिमा से जो जगत के होने के आगे मुझे तेरे संग थी अब मेरी महिमा प्रगट कर"।

हमारे लिये एक शान्तिदायक बात यह है कि यद्यपि यीशु ने फिर वही महिमा ले ली जो सनातन से वे अपने पिता के साथ रखते थे तौभी उन्हों ने अब अपनी मनुष्यता नही त्याग दी पर मानो उस को अपने मे स्वीकार करके अपनी व्यक्तिता मे स्थापित की। अभी तक वे हमारे स्वर्गीय भाई हैं। उन्हों ने हमारी मनुष्यता ग्रहण की और उनके अनुग्रह से हम उनकी महिमा में समभागी हो सकते हैं। हमें ऐसी प्रतिज्ञाएँ दी गई हैं कि जिनके द्वारा हम ईश्वरीय स्वभाव के भागी हो जावे (२ पित० १ : ४)।

इस व्याख्यान में मैंने पत्रियों की बातो की अधिक चर्चा नही की, कारण इसका तो यह है कि पत्रियो मे अधिक करके यीशु मसीह के बारे में उन बातों का वर्णन किया गया है जो अवतार से विशेष सम्बन्ध नही रखती पर प्रभु यीशु की अब की दशा और महिमा से।

योहन की बात दोहरा कर मै यह व्याख्यान समाप्त कर देता हूँ "देखो पिता ने हमो पर कैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वर के सन्तान कहावे....अभी हम ईश्वर के सन्तान हैं और अब लों यह नही प्रगट हुआ कि हम क्या होगे परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट होय तो उसके समान होंगे क्योकि उसको जैसा वह है तैसा देखेंगे और जो कोई उस पर यह आशा रखता है सो जैसा वह पवित्र है तैसा ही अपने को पवित्र करता है"।

ईश्वर के पुत्र के अवतार लेने के द्वारा यह सब आशीसें हमें प्राप्त होती हैं।

४ अध्याय

प्रायश्चित्त करना

अवतार लेने और प्रायश्चित करने का सम्बन्ध

अवतार लेने पर बिचार करते हुए तरह २ की बातें पेश आयी हैं जो प्रायश्चित्त करने से विशेष सम्बन्ध रखती हैं। या यह भी कहा जा सकता है कि अवतार लेना प्रायश्चित्त करने का एक विशेष विभाग है। प्रायश्चित्त करना न केवल यीशु मसीह के मर जाने से बरन उनके अवतार लेने और इस संसार मे जीने से हुआ। प्रभु यीशु का आना और यहां अपने जीवन को व्यतीत करना एक ईश्वरीय पत्र था जिस में उनका मर जाना मानो छाप लगाना था। मसीह का मर जाना उनके जीवन का। "आमीन" था। यीशु मसीह के जीते रहने और मर जाने का एकही अभिप्राय था अर्थात् कि वे हमारे प्रतिनिधि होकर ईश्वर के साम्हने मनुष्यो की पवित्रता और आज्ञाधीनता और भरोसा और प्रेम दिखलावें जो मनुष्य अपने पापो के कारण आप नही दिखला सकते थे। और ईश्वर का मानो प्रतिरूप होकर मनुष्यो को ईश्वर की करुणा और कृपा और क्षमाशीलता और धर्म्मशीलता दिखलावे।

कभी २ मसीही लोग ऐसी २ बाते बोलते और लिखते भी हैं कि मानो अवतार लेने का केवल यही अभिप्राय था कि मसीह इस संसार मे प्राण देवे और एक प्रकार से यह बात सच है पर मान भी तो लेना चाहिये कि जब से कि प्रभु इस संसार मे जन्म लिये तब से वे संसार के लिये अपने प्राण देने लगे।

प्रायश्चित का अर्थ

जिस अंग्रेज़ी शब्द का उल्था कदाचित् प्रायः करके "प्रायश्चित्त" किया जाता है वही शब्द (अटोन्मेन्ट) केवल एक बार नये नियम मे पाया जाता है (अर्थात् रोम ५ : ११) और यूनानी शब्द जिसका अंग्रेज़ी "अटोन्मेन्ट" उल्था है बहुत कम पाया जाता है। संज्ञा और क्रिया मिलाके वह केवल १० बेर मिलता है। देखो रोम ५:१०, ११ जहां ३ बेर पाया जाता है। क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वर से उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उसके जीवन के द्वारा त्राण पावेंगे। और केवल यह नही परन्तु हम अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से जिसके द्वारा हम ने अब मिलाप पाया है ईश्वर के विषय मे भी बड़ाई करते हैं"।

फिर २ करिन्थ०; ५,१८,१९ (४ बेर) "और सब बाते ईश्वर की ओर से है जिसने यीशु खीष्ट के द्वारा हमें अपने साथ मिला लिया और मिलाप की सेवकाई हमें दी अर्थात् कि ईश्वर जगत के लोगों के अपराध उन पर न लगा के खीष्ट मे जगत को अपने साथ मिला लेता था और मिलाप का बचन हमों को सोप दिया"।

(फिर देखो रोम० ११ : १५, २ करिन्थ ५ : २०; और १ करिन्थ० ७ : ११)

इन पदो के द्वारा दो बाते बहुत प्रत्यक्ष दिखलाई देती हैं। (१) यीशु मसीह के द्वारा मिलाप हुआ। (२) ईश्वर ही ने मनुष्यो को मसीह के द्वारा अपने साथ मिला लिया। पर यह नही लिखा कि मसीह ने ईश्वर को हमारे साथ मिला लिया।

पर एक और यूनानी शब्द है जिसका उल्था हिन्दी मे प्रायश्चित्त होता है। संज्ञा तो केवल दो बार नये नियम मे पायी जाती है अर्थात्

१ योहन २ : २ और ४ : १० (१) "और वही हमारे पापों के लिये प्रायश्चित्त है और केवल हमारे नही परन्तु सारे जगत के पापो के लिये भी" फिर (२) "इसी मे प्रेम है यह नही कि हम ने ईश्वर को प्यार किया परन्तु यह कि उस ने हमे प्यार किया और अपने पुत्र को हमारे पापो के लिये प्रायश्चित्त होने को भेज दिया"।

क्रिया भी दो बेर मिलती है (१) "इस कारण उसको अवश्य था कि सब बातो में भाइयो के समान हो जावे जिस्से वह उन बातों मे जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती है दयाल और विश्वास योग्य महायाजक बने कि लोगो के पापो के लिये प्रायश्चित्त करे" इब्रि० २ : १७। फिर (२) लूक १८ : १३ मे जहां कर उगाहनेहारा बिन्ती करता है कि "हे ईश्वर मुझ पापी पर दया कर" इस पद मे "दया कर" के लिये यूनानी शब्द प्रायश्चित्त करने की कर्मवाच्य क्रिया है।

नये नियम में एक और शब्द है जो इस शब्द से विशेष सम्बन्ध रखता है। यह भी दो बेर पाया जाता है अर्थात् (१) रोम० ३ : २५ "उस को (अर्थात् यीशु मसीह को) ईश्वर ने प्रायश्चित्त स्थापन किया कि विश्वास के द्वारा उस के लोहू से प्रायश्चित्त होवे" (यूनानी मे केवल पहिला "प्रायश्चित्त" लिखा है दूसरा नही)। और (२) इब्रि० ९ : ५ जहां हिन्दी मे उसका उलूथा है "दया का आसन" अर्थात् नियम के सन्दूक का ढकना।

निस्सन्देह यह दूसरा यूनानी शब्द जो इन छ पदों मे पाया जाता है हिन्दी शब्द प्रायश्चित्त से कुछ सम्बन्ध रखता है। यूनानी शब्द का अर्थ यह है कि कुछ किया जाय जिसके कारण ईश्वर का अनुग्रह पापी पर प्रगट किया जाए। पर यूनानी शब्द और हिन्दी शब्द में एक भारी अन्तर है। हिन्दी मे प्रायः करके प्रायश्चित्त का अर्थ यह है कि मनुष्य का कुछ कर्म जिसके द्वारा वह देवता को

सन्तुष्ट कर दे या उस को राज़ी रखे। पर नये नियम में यही अर्थ नही है। वह मनुष्य के कर्म के बारे मे नही लिखा किन्तु ईश्वर के बारे में। मनुष्य अपने लिये प्रायश्चित्त नही कर सकता है कि जिसके द्वारा उस का पाप मिट जावे या वह अपने तईं धर्म्मी बनावे या ईश्वर को सन्तुष्ट करे या उन को दयावन्त बनावे। ईश्वर दयावन्त तो हैं और केवल वेही ऐसा प्रायश्चित्त कर सकते हैं जिसके द्वारा मनुष्यों के पाप मिट जाएं और वे रोक टोक ईश्वर का अनुग्रह और दया पापियो पर प्रगट होवे। मनुष्य अपने पापों के लिये प्रायश्चित्त नही कर सकता है यह तो परमेश्वर का काम है।

अब हमे पूछना चाहिये कि परमेश्वर ने मनुष्यो के पापों को दूर करने के लिये क्या किया है। पर इस से पहिले एक और बात पर कुछ सोचना उचित है क्योंकि उसके द्वारा यह अधिक प्रगट हो जाएगा कि प्रायश्चित्त करने मे क्या २ गुण होना चाहिये। बात तो यह है कि प्रायश्चित्त करने की क्या मनसा है क्या अभिप्राय है?

प्रायश्चित्त करने का अभिप्राय।

मैं समझता हूं कि नाना प्रकार की हानियॉ इसी रीति से हुईं कि लोगो ने जैसे कि चाहिये यह बात नही समझी कि परमेश्वर और मनुष्यो के बीच मेल मिलाप करने के लिये क्या २ बातें आवश्यक हैं। इस बात को सिद्ध करने मे क्या रोक टोक है? यह रोक टोक परमेश्वर में है या मनुष्य मे? चन्द उपदेशक मानो यह दिखलाना चाहते हैं कि रोक टोक ईश्वर मे है पर सचमुच तो मनुष्य मे है। रोक टोक क्या है? पाप यही तो रोक टोक है और जब तक कि पाप न हटाया जाए तब तक मेल नही हो सकता है। पर भूलना न चाहिये कि ईश्वर नित मेल करना और कराना चाहते हैं। मनुष्य

तो वही है जो मेल नही करना चाहता। मनुष्य चाहते हैं कि ईश्वर हम से प्रसन्न रहे और हम पर अनुग्रह करके नाना प्रकार की आशीसे उतारे और यह भी चाहते हैं कि कोई ऐसा उपाय हो जाए जिससे हम मरते ही नरक से बच जाएं पर यह तो और बात है और ईश्वर से सचमुच मेल रखना और बात। ईश्वर नाना प्रकार की अच्छी २ बस्तु मनुष्यो को देते हैं हां न केवल धर्म्मियो को बरन अधर्म्मियो को भी "वह बुरे और भले लोगो पर अपना सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियो और अधर्म्मियो पर मेह बरसाता है" पर वह सचमुच चाहते हैं कि मनुष्यो मे और मुझ मे मेल होवे। मेल का क्या अर्थ है? यह कि दोनो के स्वभाव एक से हो जावे न केवल शत्रुता दूर रहे पर हर प्रकार की विरुद्धता और अलगाई भी दूर होवे। मेल का अर्थ तो मिलना है और जब लो कि ईश्वर और मनुष्यो मे एकसा स्वभाव न होने पावे तब लो मेल कैसे होवे? दण्ड से बचना और बात है मेल तो और। स्वर्ग मे प्रवेश करना चाहे होवे तौ भी यह मेल नही है। बहुत से दृष्टान्त और उपमाएं उपदेशको और लेखको से दिये जाते हैं जिन से यह बात प्रगट की जाती है कि प्रायश्चित्त एक प्रकार का जुरमाना या डांड़ है जिसके कारण मनुष्यों और परमेश्वर के बीच मेल हो सकता है। सावधानी से स्मरण कीजिये कि मैं यहां यह नही कहता हूं कि ऐसे उपायों के द्वारे ही से मेल करने और कराने मे किसी प्रकार की सहायता नहीं हो सकती है पर मेरा कहना यह है कि ऐसा-करना या कराना तो मेल नही है। यदि कोई मनुष्य किसी की निन्दा या अनादर करे और बाद इसके उसको पांच सौ रूपिये देवे या अपने ऊपर कुछ दण्ड उठावे तो दोनो मे मेल हो गया है? नही जब लो कि वह अपना अपराध स्वीकार न करे और उस से पश्चात्ताप करके दीनदापूर्वक दूसरे से क्षमा न मांगे

तब तक मेल नहीं है। जब उसका मिज़ाज बदल गया हो जब शत्रुता मिट गयी हो और वह दूसरे से फिर प्रेम रखता होवे जैसे कि वह पहिले करता था तब मेल हो सकता है पर एक प्रकार से तो हो चुका अर्थात् मन की भिन्नता दूर हो गयी है। तौ भी यह सम्भव है कि अपना शोक और पश्चात्ताप प्रगट करने के लिये कुछ करने की आवश्यकता होवे न केवल उसके कारण जिसका वह अपराधी हो गया है पर दूसरे लोगों के कारण जिनके सामने उसने उसका अनादर किया था।

मैं समझता हूं कि परमेश्वर प्रायश्चित्त करते हुए दो विशेष अभिप्राय रखते होगे (१) कि मनुष्य का स्वभाव बदल जाय और वास्तव मे ईश्वर से मेल रक्खे। और (२) कि यह मेल करना और कराना ऐसे प्रकार से किया जाए कि दूसरे २ लोग ईश्वर से मेल करने के लिये खिंचते जाएं।

इस बात को सर्वथा अपने ख़यालो से दूर कर दीजिये कि प्रायश्चित्त करने मे कोई ऐसा अर्थ है कि ईश्वर का क्रोध ठंडा किया जाय या मानो उनको जुरमाना दिया जाए।

यीशु मसीह हमारे लिये मर गये।

इसमे तो कुछ सन्देह नही है कि नये नियम मे यह बात बहुत स्पष्टता से दिखलाई गयी है कि यीशु मसीह का मर जाना मनुष्यो की मुक्ति का कारण बतलाया गया है। बार बार और नाना प्रकार से यह बात लिखी गयी है कि यीशु मसीह हमारे लिये मुए।

इस बात की चर्चा न केवल पत्रियों मे है पर प्रभु यीशु ने आप ऐसा बतलाया। उन्होंने कहा "मनुष्य का पुत्र भी सेवा कराने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतो के उद्धार के मोल में अपना

प्राण देने को आया" (मार्क १०:४५)। फिर योहन १०:११,१५,१
१८ मे यीशु बतलाता है "मैं भेड़ो के लिये अपना प्राण देता हूं"।

योहन १२ : ३२, ३३ मे यीशु अपने मरने के बारे मे कहते कि "मै यदि पृथिवी पर से ऊंचा किया जाऊं तो सभो को अपनी ओ खींचूंगा—ऐसा कहने से उसने पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से पर था"।

जब प्रभु मरने से पहिले प्रेरितो के साथ भोजन करते थे "कटोरा लिया और धन्यवाद करके उनको दिया और कहा तुम इसमे से पीओ क्योकि यह मेरा लोहू अर्थात् नियम का लोहू है बहुतो के लिये पापमोचन के निमित्त बहाया जाता है"। (२६ : २७, २८)। और उसी रात प्रभु ने फिर कहा "इससे प्यार किसी का नही है कि कोई अपने मित्रो के लिये अपना देवे यदि तुम उन कामो को जिनकी मै तुम्हे आज्ञा देता हूं तो तुम मेरे मित्र हो" (योहन १५: १३, १४)। इन बचनों से मालूम होता है कि प्रभु की समझ मे वे अपने प्राण मनुष्यो की मुक्ति के लिये देने को थे।

और मालूम होता है कि मसीह जीते हुए प्रायः अपने मर जाने के विषय मे बहुत सोच बिचार करते थे और अपने चेलो को सिख-लाते थे कि थोड़े दिनो के बाद मै मर जाऊंगा। प्रायः करके लोग समझते है कि जो कुछ करना है सो मेरे जीते जी करना चाहिये मरने के बाद कुछ नहीं बन पड़ेगा पर मालूम होता है कि यीशु मसीह नही समझते थे कि मेरे जीते हुए मेरा राज्य बनेगा पर मेरे मरने से काम सिद्ध हो जाएगा।

आश्चर्य्य की बात है कि जब पहाड़ पर मूसा और एलिया यीशु के साथ बात चीत कर रहे थे वे किन २ बातों के बारे मे बात चीत

करते थे? पूरा बर्णन तो नही किया गया है पर एक बात की चर्चा तो है और वह क्या है? वे "उसकी मृत्यु के विषय में जिसे वह यरूसलम में पूरी करने पर था बात करते थे"।

निस्सन्देह सुसमाचारो में यद्यपि मसीह की शिक्षा और कर्म्मों के बारे मे बहुत कुछ लिखा गया है तौ भी उनके मर जाने के बारे में बहुत बिस्तार पूर्वक बर्णन किया गया है। मालूम होता है कि लेखको ने अच्छे प्रकार से समझ लिया कि मसीह की शिक्षाओ और कर्म्मों की अपेक्षा उनका मरना ही प्रधान घटना था। पीछे हम देख लेंगे कि पत्रियो मे भी यीशु मसीह के जीवन वृत्तान्त की बहुत कम चर्चा है पर उनके मर जाने के विषय मे बहुत अधिक चर्चा है।

प्रेरितों का उपदेश यीशु मसीह के मर जाने के विषय में।

अब देख लेना चाहिये कि यीशु मसीह के स्वर्ग पर जाने के बाद प्रेरित लोग उपदेश करते हुए यीशु मसीह के मर जानें के बारे मे क्या २ शिक्षा देते थे।

मान तो लेना चाहिये कि वे पुनरुत्थान के विषय मे बहुत कुछ कहते थे और बार बार इस कारण यीशु मसीह की मृत्यु की चर्चा करते थे कि वे यिहूदियो को दिखलावे कि मसीह को मार डालके वे कैसे पापी और अधर्म्मी हुए। तौ भी ऐसा करते हुए वें यह बतलाते थे कि यिहूदी लोगो ने यीशु को मार डालके ईश्वर की मनसा या अभिप्राय रोक नहीं दिया बरन वास्तव में उसको पूरा किया। ईश्वर के पुत्र का न केवल अवतार लेना बरन मर ही जाना पहले ही से ठहराया गया था। देखो प्रेरित २: २३; ३: १८; ४: २७, २८; १३: २७,)।

पितर के पहिले उपदेश मे यह बात नही कही गयी थी कि यीशु के मरने के कारण से पापो के लिये क्षमा प्राप्त होवे तौ भी यह तो बतलाया गया था कि यह यीशु ही के द्वारा होवे "तुम में से प्रत्येक यीशु ख्रीष्ट के नाम से बपतिस्मा ले कि तुम्हारा पापमोचन होवे" (प्रेरित २ : ३८)। और मालूम होता है कि आरम्भ ही से मसीही लोग प्रभुभोज मे शरीक होते थे जो मसीह के मर जाने का स्मरण दायक नियम है (प्रेरित २ : ४२)।

फिर प्रेरित० ४ : १२ पितर बतलाता कि केवल यीशु मसीह और उनके नाम के द्वारा मुक्ति मिल सकती है।

जब फिलिप ने कूशदेश के एक प्रधान को शिक्षा दी तो किस विशेष बात के बारे मे उसने दी ? मसीह के ऐश्वर्य्य और महिमा के बारे मे नही पर उसकी दीनता और मार डाले जाने के बारे मे (प्रेरित ८ : ३२—३५)।

पितर कर्णीलिय को उपदेश सुनाते हुए यह बतलाता था कि "जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करे सो उसके नाम के द्वारा पापमोचन पावेगा" प्रेरित १० . ४३।

प्रेरित ११ : २० मे एक बचन है जो अधिक सोच बिचार करने के योग्य है अर्थात् "प्रभु यीशु का सुसमाचार"। इस कथन का अर्थ तो यह नही कि "वह सुसमाचार जो यीशु प्रचार करते थे" या "यीशु मसीह की शिक्षा" या "वह सुसमाचार जो यीशु मसीह के विषय मे है" पर वह सुसमाचार जो यीशु आप है। यीशु मसीह विशेष करके उपदेशक नही बरन मुक्तिदाता गिने जाते थे उनकी शिक्षा के द्वारा नही पर उनही के द्वारा मुक्ति है।

पिसिदिया के अन्तैखिया के लोगो के लिये पावल का क्या विशेष उपदेश था ? यह कि यीशु मसीह "के द्वारा पापमोचन का समाचार

तुम्हें सुनाया जाता है और उसी के द्वारा हर एक विश्वासी सब बातो से निर्दोष ठहराया जाता है जिनसे तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नही ठहर सकते थे" (प्रेरित १३ . ३८, ३९)।

जब पावल फिलिपी के जेलख़ाने के दारोग़ा के सामने सुसमाचार का सार बतलाता तो किस रीति से बतलाता ? "प्रभु ख्रीष्ट पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा" (प्रेरित १६:३१)। यहां मृत्यु की चर्चा नही है तो सही पर मुक्ति के लिये यीशु मसीह की शिक्षा तो विशेष बात नही किन्तु यीशु मसीह ही को स्वीकार करना चाहिये। न केवल यीशु के द्वारा मुक्ति का सुसमाचार है पर वह आप मुक्ति का कारण है। थिसलोनिका नगर मे पावल का यह उपदेश था कि "ख्रीष्ट को दु:ख भोगना और मृतको मे से जी उठना आवश्यक था" (प्रेरित १७ : ३)।

आथीनी मे पावल "यीशु का और जी उठने का सुसमाचार सुनाता था" (प्रेरित १७ : १८)।

उस उपदेश मे जो पावल ने इफ़िस नगर के प्राचीनो को मिलीत मे सुनाया एक विशेष बचन है जो यीशु मसीह के मर जाने से दृढ़ सम्बन्ध रखता है "तुम ईश्वर की कलीसिया की चरवाही करो जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है" (प्रेरित २० : २८)। यहां न केवल मसीह के मरने की विशेष चर्चा है पर मालूम होता है कि यीशु मसीह का लोहू तो ईश्वर का लोहू कहलाया गया है।

प्रेरितो की क्रियाओ के वृत्तान्त मे यीशु मसीह के मर जाने और जी उठने के विषय में बहुत सी बाते लिखी हुई है। यीशु मसीह के द्वारा पापो के लिये क्षमा और छुड़ौती हैं उन्ही के द्वारा मुक्ति। और उसी प्रकार से हमारे प्रभु का नाम पेश किया जाता है कि यह बात साफ़ दिखलाई देती है कि प्रेरित यह नही समझते थे कि केवल

यीशु की शिक्षा से ज्ञान मिलता पर मसीह की मृत्यु के द्वारा। इस पुस्तक (अर्थात् प्रेरितो की क्रियाओ के वृत्तान्त) में अधिक करके प्रेरितो के उपदेश ही का बर्णन नही लिखा गया है पर उनकी पत्रियों में यीशु मसीह की मृत्यु के गुणो का प्रभाव अधिक स्पष्टता से दिखलाया गया है। यह बात भी योहन के प्रकाशित वाक्य मे अजीब प्रकार से प्रगट की गयी है।

योहन के प्रकाशित वाक्य में मसीह की मृत्यु का वर्णन।

आरम्भ ही मे (१ : ६) यह कथन पाया जाता है "जिसने हमे प्यार कर अपने लोहू मे हमारे पापो को धो डाला"। निस्सन्देह यह मसीह की मृत्यु का बहुत स्पष्ट संकेत है।

५ वे पर्ब्ब मे एक अजीब दर्शन का बर्णन है जिस मे यीशु मसीह दिखलाई पड़ता है "एक मेम्ना जैसा बध किया हुआ खड़ा है" (५ · ६) जिससे बलिदान का संकेत स्पष्ट रीति से दिखलाया गया है और ९ वे पद मे उनकी स्तुति इसी प्रकार से की गयी है "तू बध किया गया और तू ने अपन लोहू से हमें हर एक कुल और भाषा और लोग और देश में से ईश्वर के लिये मोल लिया"। और फिर १२ वे पद मे "मेम्ना जो बध गिया गया सामर्थ्य औ धन औ बुद्धि औ शक्ति औ आदर औ महिमा औ धन्यवाद लेने के योग्य है" निस्सन्देह इस दर्शन मे मसीह की मृत्यु का प्रभाव आश्चर्य्ये की रीति से दिखलाया गया है।

फिर ७ वे पर्ब्ब मे अगनित लोगो का बर्णन है जो सब देशो और कुलो और लोगो और भाषाओ मे से बचाये गये हैं और मेम्ने के

साम्हने खड़े है। उनके बारे मे यह लिखा गया है कि उन्होने "अपने २ वस्त्र को मेम्ने के लोहू मे धोके उजला किया। इस कारण वे ईश्वर के सिंहासन के आगे हैं और उसके मन्दिर मे रात और दिन उसकी सेवा करते है"।

१३वे पर्ब्ब मे यीशु मसीह का वर्णन इस रीति से किया गया है (१३ : ८) "मेम्ना जो जगत की उत्पत्ति से बध किया हुआ है"। प्रकाशित की पुस्तक में बार बार मसीह के लिये "मेम्ना" का नाम लिया गया है और विशेष करके इस कारण से कि जैसे कि प्राचीन दिनो मे यिहूदियों ने बलिदान के द्वारा अपने पापो के लिये क्षमा पायी वैसे मेम्ने रूपी यीशु के द्वारा सच्चे मसीही यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा अपने पापो से क्षमा और छुड़ौती पाते है।

वे जो नये नियम की शिक्षा स्वीकार करते अवश्य यह मान लेंगे कि प्रेरित लोगों ने मसीह के मरने और जी उठने के बाद वही बात मान ली जो यीशु ने अपने जीते जी उनको बतलाई कि मै लोगो के लिये अपना प्राण देता हूँ। और हमारे प्रभु की मृत्यु के कारण मसीही जो सच्चे विश्वासी हैं अनन्त जीवन के अधिकारी हो जाते है।

---

५ अध्याय

प्रायश्चित्त करना

नये नियम की पत्रियों में यीशु मसीह की मृत्यु के बारे में।

हमे अवकाश नही मिलेगा कि एक एक पत्री के पूरे मज़मून पर सावधानी के साथ सोच बिचार करें पर अवश्य है कि चन्द मुख्य पादो को जो इस बात से विशेष सम्बन्ध रखते हैं चुन कर पेश करे।

एक बात स्मरण कीजिये यदि किसी पत्री मे किसी बात की चर्चा नही है या कम चर्चा है तो मत समझ लीजिये कि यह बात मुख्य नही गिनी जाती थी कदाचित् वह यहां तक मुख्य थी कि सब लोगो ने उसको अच्छी तरह से समझ लिया था और उसकी चर्चा की ज़रूरत नही पड़ी।

पावल प्रेरित की पत्रियाँ।

थिसलोनिकियों को पहिली पत्री में पावल विश्वासियो को उकसाते हैं कि वे नेक चाल से चले और मसीह के आने की बाट जोहते रहे। और ऐसी २ बाते लिखते हुए उन्होंने यह कहा कि "ईश्वर ने हमे क्रोध के लिये नही पर इस लिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से त्राण प्राप्त करें जो हमारे लिये मरा" (१ थिस० ५ : ९)।

करिन्थियों को पहिली पत्री के आरम्भ मे पावल बहुत स्पष्टता से दिखलाते हैं कि उनकी समझ में यीशु मसीह की मृत्यु कैसी मुख्य

बात थी। "ऐसा न हो कि ख्रीष्ट का क्रूश व्यर्थ ठहरे क्योंकि क्रूश की कथा उन्हे जो नाश होते है मूर्खता है परन्तु हमे जो त्राण पाते हैं ईश्वर का सामर्थ्य है (१ करिन्थ १:१७,१८) हम लोग क्रूश पर मारे गये ख्रीष्ट का उपदेश करते हैं" (१:२३)। "क्योंकि मैंने यही ठहराया कि तुम्हों मे और किसी बात को न जानूं केवल यीशु ख्रीष्ट को हां क्रूश पर मारे गये ख्रीष्ट को" (२ : २)। फिर ५ : ७ मे वे लिखते हैं कि "हमारा निस्तार पर्ब्ब का मेम्ना अर्थात् ख्रीष्ट हमारे लिये बलि दिया गया है"। फिर देखिये "भाई जिसके लिये ख्रीष्ट मुआ" (८ : ११)। १०वे और ११वे पर्ब्बों में प्रभु भोज की चर्चा है जिसके द्वारा मण्डली के लोग "प्रभु की मृत्यु को जब लों वह न आवे प्रचार करते हैं" (१ करिन्थ० ११ : २६)। फिर १५वें पर्ब्ब मे जहां पावल पुनरुत्थान की विशेष शिक्षा देते है वह यह लिखते हैं "क्योंकि सब से बड़ी बातों में मैंने यही तुम्हे सौंप दिई जो मैंने ग्रहण भी की थी कि ख्रीष्ट धर्म्मपुस्तक के अनुसार हमारे पापो के लिये मरा" (१५ : ३)।

दूसरी पत्री में यीशु के मृत्यु की इतनी चर्चा नही है तौभी है तो और चाहे चर्चा हो या चर्चा न हो वह बात तो उपदेश की नेव है। यदि नेव दिखाई न देवे तौभी भीत उसपर बनी है और खड़ी रहती है। और दूसरी पत्री मे (४ : ५) पावल यह साफ लिखते हैं कि "हम अपने को नही परन्तु ख्रीष्ट यीशु को प्रभु करके प्रचार करते हैं" हॉ वही ख्रीष्ट यीशु जिसने धनी होके हमारी दरिद्रता स्वीकार की कि उसकी दरिद्रता के द्वारा हम धनी होवें (२ करिन्थ० ८:९)।

गलातियो और रोमियों को पत्रियों मे पावल विशेष करके इस बात को प्रमाणिक करते हैं कि मुक्ति विश्वास ही के द्वारा से मिलती है न रीति विधियो के द्वारा न मनुष्यो के धर्म्म कर्म्म के द्वारा। और

ऐसा बर्णन करते हुए पावल यह दिखलाता है कि खीष्ट ही पर जो हमारे लिये मुआ, विश्वास रखना चाहिये। सुसमाचार एक ही है कोई दूसरा नही है। और वह सुसमाचार क्या है? ईश्वर के पुत्र ने हमे प्यार किया और हमारे लिये अपने तई सोप दिया (गलात० २:२०)। उन गलातियो के बीच क्या सुसमाचार प्रचार किया गया था? "खीष्ट क्रूश पर चढ़ाया हुआ साक्षात् तुम्हारे बीच मे प्रगट किया गया" (गलात ३:१)। फिर लिखा है "खीष्ट ने दाम देके हमे व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया कि वह हमारे लिये स्रापित बना" (गलात ३:१३)। अन्त में पावल लिखते हैं "पर मुझसे ऐसा न होवे कि किसी और बात के विषय मे बड़ाई करूँ केवल हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के क्रूश के विषय मे"। (गलात० ६:१४)।

यहाँ सम्भव नही कि हम रोमियों को पत्री लेकर उसके सब विषयो पर सोच विचार करे। इसमें जैसे कि गलातियो को पत्री मे पावल दिखलाता है कि मनुष्य चाहे वे यिहूदी हो चाहे अन्य देशी हों न तो व्यवस्था के कर्म्मों के द्वारा न तो और किसी प्रकार से धर्म्मी हो सकते हैं पर केवल ईश्वर के अनुग्रह से जो यीशु मसीह के द्वारा प्रगट हुआ। हमारे लिये यह चाहिये कि अपने तई पापी और निर्बल समझ कर हम यीशु मसीह के शरणागत होवें और उन पर विश्वास लाकर पापो के लिये क्षमा और वही शक्ति पावे जिसके द्वारा हम सच्चे धर्म्मी बन सकेंगे। उस ही के अनुग्रह से हमारे पाप दूर किये जा सकते और उस ही के अनुग्रह से धर्म्म मिल सकता है।

संक्षेप मे पावल इस रीति से यह बात बतलाता है (रोम० ३:२३, २६) "सभो ने पाप किया है और ईश्वर के प्रशंसा योग्य नहीं होते हैं पर उसके अनुग्रह से उस उद्धार के द्वारा जो खीष्ट यीशु से है सेत मेत धर्म्मी ठहराये जाते हैं उसको ईश्वर ने प्रायश्चित्त स्थापन किया

कि विश्वास के द्वारा उसके लोहू से प्रायश्चित्त होवे जिस्ते आगे किये हुए पापो से ईश्वर की सहनशीलता से आनाकानी जो किई गई तिसके कारण वह अपना धर्म्म प्रगट करे। हाँ इस वर्त्तमान समय में अपना धर्म्म प्रगट करे यहाँ लों कि यीशु के विश्वास के अवलम्बी को धर्म्मी ठहराने में धर्म्मी ठहरे"।

इन पदों से लिखनेवाले का यह अर्थ मालूम होता है कि परमेश्वर दयावन्त होकर मनुष्यो के पापों को क्षमा करना चाहते हैं बरन बहुतो की क्षमा तो की तौभी यीशु मसीह के लोहू से अर्थात् उनकी मृत्यु से यह बात प्रगट की गई है कि परमेश्वर ने करुणामय और दयायुक्त होकर अपना धर्म्म नही छोड़ दिया है पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा दिखला चुके हैं कि पाप का प्रतिफल मृत्यु है चाहे मनुष्य अपने पाप का प्रतिफल आप सहे या ईश्वर अपने पुत्र के द्वारा उनके लिये सहे और उनको धर्म्मी बनावे और ठहरावें। ईश्वर के लिये पाप को क्षमा करना और मनुष्यो को पाप से बचाना बचन मात्र का काम नही बिना आप दुःख भोगते हुए ईश्वर यह कठिन काम कर नहीं सकते हैं।

५ वें पर्ब्ब मे फिर बार बार यह बात कही गयी है कि मसीह की मृत्यु के द्वारा हमारा बचाव है। देखो (६ पद) "क्योंकि जब हम निर्बल हो रहे थे तब ही ख्रीष्ट समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा"। फिर (८ पद) "ईश्वर हमारी ओर अपने प्रेम का महात्म्य यूँ दिखाता है कि जब हम पापी हो रहे थे तब ही ख्रीष्ट हमारे लिये मरा"। फिर (१० पद) "यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वर से उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उसके जीवन के द्वारा त्राण पावेगे"।

इस ५ वें पर्ब्ब में विस्तार पूर्बक बतलाया गया है कि जैसे कि एक के अर्थात् आदम के पाप से सब मनुष्य पापी हो गये वैसे यीशु

मसीह के द्वारा बहुत तो धर्म्मी हो गये और यह सम्भव है कि सब ऐसे हो जावें यदि वे मसीह पर पूरा विश्वास लावे।

फिर देखिये ८:३,४ "क्योंकि जो व्यवस्था से अनहोना था इसलिये कि शरीर के द्वारा से वह दुर्बल थी उसको ईश्वर ने किया अर्थात् अपने ही पुत्र को पाप के शरीर की समानता मे और पाप के कारण भेज के शरीर मे पाप पर दण्ड की आज्ञा दी इसलिये कि व्यवस्था की बिधि हमो मे जो शरीर के अनुसार नही परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं पूरी किई जाय"।

इस पत्री से दूसरे पदो को पेश करने की आवश्यकता नही है क्योंकि इसमे यह बात सम्पूरणता से लिखी गयी है कि मनुष्यो की मुक्ति ईश्वर के अनुग्रह पर निर्भर है और वह अनुग्रह विशेष कर यीशु मसीह की मृत्यु ही के द्वारा प्रगट किया गया है।

पावल की दूसरी पत्रियो मे भी ऐसी ऐसी बाते हैं जिनसे यह बात स्थिर रहती है कि अन्त लो पावल यही शिक्षा देता था कि प्रभु यीशु की मृत्यु ही से हम मुक्ति पाते हैं।

फिलिप० मे देखिये २:८ मे लिखा है कि यीशु ने "मनुष्य के से डौल पर पाया जाके अपने को दीन किया और मृत्यु लो हाँ क्रूश की मृत्यु लो आज्ञाकारी रहा"। और जब ३ रे पर्ब्ब में पावल धर्म्म प्राप्त करने के बारे मे लिखता है तो विशेष करके वह पहिले मसीह की शिक्षा की चर्चा नही करता न यीशु की चाल के अनुसार चलना प्रधान बात समझता है किन्तु लिखता है कि ऐसा हो कि मैं खीष्ट को प्राप्त करूँ और उसमे पाया जाऊँ ऐसा कि मेरा धर्म्म जो व्यवस्था से है सो नही परन्तु वह धर्म्म जो खीष्ट के विश्वास के द्वारा से है वही धर्म्म जो विश्वास के कारण ईश्वर से है मुझे होवे जिस्ते मैं खीष्ट का और उसके जी उठने की शक्ति को और उसके दुःखों की संगति को

जानूँ और उसकी मृत्यु के सदृश किया जाऊँ (फिलिप० ३ :८–१०)।

कलस्स० और इफिस० मे भी ऐसी २ बाते हैं। क्या परमेश्वर पृथिवी पर और स्वर्ग में सब कुछ अपने से मिला लावे तो कैसे करे? अपने पुत्र के द्वारा हां "उसके क्रूश के लोहू के द्वारा से" वे मिलाप करेंगे (कलस्स० १ : २०)। और फिर जब हमारे अपराधो को क्षमा करने के विषय मे पावल कुछ वर्णन करता है तो बतलाता है कि क्रूश ही के द्वारा यह काम सिद्ध हुआ है (कलस्स २ : १४, १५)।

इफिस० में भी ऐसे ऐसे कथन हैं। "जिसमे" अर्थात् यीशु मसीह में "उसके लोहू के द्वारा से हमे उद्धार अर्थात् अपराधो का मोचन ईश्वर के अनुग्रह के धन के अनुसार मिलता है" (इफ़िस० १ : ७)। "पर अब तो ख्रीष्ट यीशु मे तुम जो आगे दूर थे ख्रीष्ट के लोहू के द्वारा निकट किये गये हो" (इफ़िस० २ : १३)। "ख्रीष्ट ने हम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने को ईश्वर के आगे चढ़ावा और बलिदान करके सुगन्ध की बास के लिये सौंप दिया" (इफ़िस०५:२)।

पिछली पत्रियो मे भी यद्यपि अधिक विशेष शिक्षा नही है तो भी इस बात की चर्चा है। "क्योंकि एक ही ईश्वर है और ईश्वर और मनुष्यो का एक ही मध्यस्थ है अर्थात् ख्रीष्ट यीशु जो मनुष्य है जिसने सभो के उद्धार के दाम मे अपने को दिया" (१ तिम०२:५) और फिर तीतस० मे (२ : १४) "जिसने अपने तईं हमारे लिये दिया"।

दूसरी दूसरी पत्रियों की शिक्षा।

और न केवल पावल ही की पत्रियो में यीशु मसीह की मृत्यु के बारे में ऐसी २ शिक्षा पाई जाती है दूसरी पत्रियो में भी ऐसे २ कथन

हैं जिनसे यह बात प्रत्यक्ष दिखलाई देती है कि आरम्भ ही से मण्डली में यीशु मसीह की मृत्यु मसीही शिक्षा मे मुख्य और प्रधान गिनी जाती थी।

हम सब पत्रियो के सब ऐसे कथनो को यहां नही दे सकते हैं केवल दो चार पेश करेंगे।

याक़ूब की पत्री।

याक़ूब मे कोई पद नही है जिसमे यीशु मसीह की मृत्यु का प्रभाव बतलाया गया है पर इसका विशेष कारण था। याक़ूब ने देखा कि बहुत से लोग "विश्वास विश्वास" पुकारते हुए और "हे प्रभु हे प्रभु" बोलते हुए बचन मात्र के मसीही होते थे वे सचमुच धर्म्मी नही होते थे क्योंकि वे ईश्वर के आज्ञाकारी नही हुए। ऐसे लोगो के लिये याक़ूब बतलाता है कि वह जो सचमुच यीशु मसीह पर विश्वास करे सो यहां लों भरोसा रक्खे कि अपने स्वामी की आज्ञा के अनुसार चलेगा और यदि वह ऐसा न करे वह सच्चा विश्वासी नही है।

इब्रियों की पत्री।

इब्रियो को पत्री मे यीशु मसीह के अनेक गुणो का बर्णन है। उनकी प्रधानता और श्रेष्ठता अजीब प्रकार से बतलाई गयी है। पर साथ इसके उनकी दीनता की बहुत चर्चा है बरन यह दिखलाया जाता है कि उनकी अब की उन्नति उनके अवनति स्वीकार करने से प्राप्त हुई। मसीह न केवल महायाजक थे पर बलिदान भी "कितना अधिक करके ख्रीष्ट का लोहू जिसने सनातन आत्मा के द्वारा अपने तईं ईश्वर के आगे निष्कलंक चढ़ाया तुम्हारे मन को मृतवत कर्म्मों से शुद्ध करेगा कि तुम जीवते ईश्वर की सेवा करो" (इब्रि० ९:१४)।

नाना प्रकार से लेखक मसीह की मृत्यु पेश करता है। "हम यह देखते हैं कि यीशु को मृत्यु भोगने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिनाया गया है इस लिये कि वह ईश्वर के अनुग्रह से सब के लिये मृत्यु का स्वाद चीखे (इब्रि० २:९)। "हम लोग यीशु ख्रीष्ट के देह के एक ही बेर चढ़ाये जाने के द्वारा पवित्र किये गये हैं" (इब्रि० १०:१०)। "प्रभु यीशु जो सनातन नियम का लोहू लिये हुए भेड़ों का बड़ा गड़ेरिया है" (इब्रि० १३:२०)।

पितर की पत्रियां।

पितर की पत्रियो में देखिये यहां भी प्रभु यीशु की मृत्यु मुख्य बात दिखलाई देती है। उसने लिखा "तुम ने....जो उद्धार पाया सो नाशमान वस्तुओ के अर्थात् रूपे अथवा सोने के द्वारा नही परन्तु निष्कलंक और निष्खोट मेम्ने सरीखे ख्रीष्ट के बहुमूल्य लोहू के द्वारा से पाया जो जगत् की उत्पत्ति के आगे से ठहराया गया था परन्तु पिछले समय पर तुम्हारे कारण प्रगट किया गया" (१ पितर १:१८-२०)। फिर "ख्रीष्ट ने भी अर्थात् अधर्म्मियो के लिये धर्म्मी ने एक बेर पापों के कारण दुःख उठाया जिसमे हमें ईश्वर के पास पहुंचावे कि वह शरीर मे तो घात किया गया परन्तु आत्मा में जिलाया गया। (१ पितर० ३ : १८)।

इन सब पदो पर ध्यान देते हुए हमारे मनो में किसी प्रकार का सन्देह नही रह सकता है कि नये नियम मे विशेष और मुख्य शिक्षा यह है कि प्रभु यीशु मसीह के मर जाने के द्वारा मनुष्यों को मुक्ति मिलती है। न केवल उनके अवतार लेने के द्वारा ईश्वर का अनुग्रह प्रगट हुआ पर उनकी मृत्यु किसी न किसी रीति से हमारी मुक्ति का कारण हुई।

मसीह की मृत्यु किस प्रकार से मनुष्यों की मुक्ति का कारण हुई ?

अब हमें सोच बिचार करना चाहिये कि क्या कारण है कि यीशु मसीह की शिक्षा से नही और न उनके इस संसार मे अवतार लेने और नेक आदर्श देने से हम को मुक्ति मिलती है किन्तु उनकी मृत्यु ही के द्वारा से।

एक बात तो स्वीकार करना चाहिये। यह तो सर्वथा सम्भव है कि ईश्वर का कोई काम गुणकारक होवे तौ भी उसका पूरा अर्थ और अभिप्राय और प्रभाव करने की रीति हमारी समझ से बाहर रहे। हम अपने लड़कों के लिये नाना प्रकार के काम करते हैं जिनका पूरा बर्णन वे लड़के नहीं समझ सकते हैं तौ भी वे काम जो किये गये हैं निष्फल नहीं है। लड़को को बात तो प्रत्यक्ष है कि माता पिता ने हमारे लिये यह काम किया है और इस काम के द्वारा हम को बहुत लाभ प्राप्त होता है तौ भी वे कदाचित् नही जानते है कि क्यो ऐसा करना ज़रूर था और क्यो इस रीति या उस रीति से करना तो चाहिये था। वैसे ही यह बात सम्भव है कि हम दीन हीन होकर यह स्वीकार करे कि ईश्वर ने हमारे ऊपर अनुग्रह करके हमारे पापो को दूर करने के लिये अपने पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा प्रायश्चित्त किया है तौ भी हम को यह कहना पड़ेगा कि हम नही जानते हैं कि क्यो ईश्वर को ऐसा करना पड़ा और किस प्रकार से मसीह की मृत्यु हमारे अनन्तजीवन प्राप्त करने का कारण हुई। समझ लीजिये कि मै यह नही कहता हूँ कि उसका कारण हम कुछ भी नही समझ सकते है पर केवल यह कि यदि हम नही समझ सकें तौ भी ईश्वर का यह करना यथार्थ और गुणकारी हो सकता है। परमेश्वर बहुत कुछ करते है जो हमारी समझ से बाहर है।

एक बात तो बहुत ही स्पष्ट है अर्थात् कि प्रभु यीशु हमारे लिये ही मरे अर्थात् उन्हीं ने जान बूझकर अपना प्राण हमारी मुक्ति के लिये दे दिया। उन्होने समझ लिया कि मेरे मर जाने के द्वारा पापी अपने पापों से बच जाएंगे और मुक्ति प्राप्त करके स्वर्ग के अधिकारी हो जायंगे।

मण्डली में नित लोग इस बात के विषय में बहुत सोच बिचार करते है कि किस तरह से यीशु मसीह की मृत्यु मनुष्यो की मुक्ति का कारण हुई है?

दो विशेष प्रकार के सिद्धान्त निकाले गये हैं (१) एक मे तो यह शिक्षा है कि यीशु की मृत्यु का प्रभाव उस रोक को मिटा डालता है जिसके कारण ईश्वर मनुष्यों के पापों को क्षमा नही कर सकते थे अर्थात् कि किसी न किसी कारण से बिना यीशु मसीह के मर जाने के ईश्वर मनुष्यो के पापों को नही क्षमा कर सकते थे। (२) दूसरे में यह कहा जाता है कि मसीह के मर जाने का प्रभाव उस रोक को दूर करता है कि जिसके कारण से मनुष्य अपने पापों को जैसे कि चाहिये वैसे नही पहचानते थे और इस कारण उनसे पश्चात्ताप कर के दीन हीन होकर ईश्वर के पास नही आते थे। मैं समझता हूँ कि कुछ न कुछ दोनो बाते ठीक है। निस्सन्देह यीशु की मृत्यु का प्रभाव अजीब प्रकार से पापियों के मनो में गुणकारी होता है उसके द्वारा वे पाप की बुराई पहचानते और अपने पापो से शरमाते हुए उनसे पश्चात्ताप करते हैं और ईश्वर का प्रेम पहचान कर वे नम्रता पूर्वक उनकी ओर खीचे जाते हैं। और इस में भी सन्देह नही कि नये नियम मे यह बात दिखलाई गयी है कि किसी न किसी प्रकार से ईश्वर तो प्रभु यीशु की मृत्यु को मनुष्यों की मुक्ति के लिये स्वीकार करते हैं और उसके कारण पापियो को जो यीशु मसीह पर विश्वास लाते ग्रहण करते हैं।

पर ठीक ठीक किस प्रकार से यह प्रतिफल होता है हम पूरी रीति से नही समझ सकते हैं । नाना प्रकार के वर्णन किये जाते और नाना प्रकार की उपमाएं दी जाती हैं जो सर्वथा स्वीकार करने के योग्य नही हैं और जिनके कारण लोग या तो ऐसे सिद्धान्त स्वीकार करते जो ईश्वर का अनादर करते हैं या ठोकर खाकर मसीही मत को तुच्छ जानते हैं । कभी लोग ऐसी शिक्षा देते हैं कि मानो ईश्वर क्रोधित थे यीशु मसीह ने अपने मर जाने के द्वारा उन को शान्त किया । या ईश्वर मनुष्यो को मुक्ति नही देना चाहते पर प्रभु यीशु ने उनको राज़ी बनाया । या ईश्वर ने ठहराया कि मैं अवश्य किसी न किसी को दण्ड दूंगा और मसीह ने बीच में आकर उस दण्ड को सहा ।

ऐसी सब शिक्षाओं को दूर कीजिये और प्रतीतिं कीजिये कि जो कुछ याशु ने किया तो ईश्वर ने किया या कराया । यीशु ने न तो ईश्वर के मन में प्रेम उत्पन्न किया न उसको बढ़ाया पर ईश्वर ही के प्रेम के कारण यीशु तो जगत में आये और मर भी गये ।

मान लीजिये कि ईश्वर के प्रायश्चित्त करने से (यीशु मसीह के द्वारा) नाना प्रकार की बातें हैं जो हम नही समझ सकते हैं तौ भी हम पूरा भरोसा कर सकते हैं कि जो कुछ ईश्वर ने किया सो अच्छा किया और चन्द बातें ऐसी हैं जो अत्यन्त स्पष्ट और साफ़ हैं उनको स्वीकार करके आनन्दित हूजिये और ग्रहण कीजिये कि यीशु मसीह की मृत्यु से मै मुक्ति पा सकता हूं ।

मैं पांच बातो की चर्चा करता हूँ जो मुख्य हैं और हर प्रकार से स्वीकार करने के योग्य हैं ।

(१) पिता और पुत्र एक हैं । यीशु मसीह संसार में नही आये कि वे अपने पिता को संतुष्ट करें या उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन

या तबदीली करें पर इस लिये कि वे अपने पिता को प्रगट करें। प्रभु यीशु जीते रहते और मरते ही पिता का निरुपम प्रेम दिखलाते रहते थे।

(२) वे लोग जो कहते हैं कि अनुचित था कि निष्पाप मसीह पापियों के लिये मर जाएं भूल में पड़े है। संसार मे नित यह बात हुआ करती है कि उत्तम से उत्तम लोग प्रेम के कारण अपराधियों के लिये अपने ऊपर नाना प्रकार के दुःख उठाया करते हैं और ऐसा करते हुए उनकी भलाई करते हैं और अगनित लाभ उनके लिये प्राप्त करते हैं।

(३) यीशु मसीह का उसी प्रकार से संसार में आना और दुःख उठाकर मर जाना अद्भुत घटना तो थी पर स्मरण कीजिये कि मनुष्यों का ईश्वर को छोड़कर पाप में फँस जाना यह भी अद्भुत बात थी। रोग तो आश्चर्य्य का था अलौकिक औषध की आवश्यकता पड़ी।

(४) यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा ईश्वर ने अजीब प्रकार से इस बात को प्रकाशित कर दिया कि पाप कैसी बुरी बात है। हां यहां तक बुरी बात कि बिना यीशु मसीह के मर जाने के मनुष्य उससे नही बच सकते हैं। जहां मनुष्य यीशु को अपना मुक्तिदाता जानते है वहां वे पाप से बहुत घिन खाते और उससे बचने के लिये बहुत चेष्टा करते हैं।

(५) यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा ईश्वर का प्रेम अत्यन्त स्पष्टता से प्रकाशमान हो जाता है। यहां लों ईश्वर ने मनुष्यों से प्रेम किया कि उन्होंने अपने पुत्र मे होकर उनके बीच अवतार लिया और उन के लिये अपना प्राण दे दिया।

इन बातों के बारे में

एक वाज़

"हमने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के एकलौते का जलाल"

यूहन्ना १ : १४

अकसर करके जब हम यीशु मसीह के जलाल के बारे मे कुछ कहते हम उस जलाल का ख़ियाल करते जो उसने अपने बाप के साथ इस दुनिया मे पैदा होने से पहिले रखा या उस जलाल का जो उसने आसमान मे फिर चढ़ने के बाद पाया।

यह ख़ियाल तो वाजबी है क्योंकि ऐसे जलाल का ज़िक्र बार बार नये अहदनामे में पाया जाता है।

जब यीशु मसीह ने मरने से पहिले अपने बाप से दुआ की उसने कहा कि "अब ऐ बाप तू उस जलाल से जो मैं दुनिया की पैदाइश से पेशतर तेरे साथ रखता था मुझे अपने साथ जलाली बना दे"। (यूहन्ना १७ : ५)। फिर यूहन्ना ७ : ३६ में लिखा है कि "रूह अब तक नाज़िल न हुआ था इसलिये कि यीशु अब तक जलाल को न पहुँचा था"। फिर "जब यीशु अपने जलाल को पहुँचा तो उनको (याने शागिर्दों को) याद आया" (यूहन्ना १२ : १६)। यीशु मसीह के आसमान पर चढ़ने के बाद पत्रस ने कहा "ख़ुदा ने अपने ख़ादिम यीशु को जलाल दिया" (आमाल ३ : १३)। और अपने ख़त में वह लिखता कि "जिसने उसको मुर्दों में से जिलाया और जलाल बख़्शा" (१ पत्रस १ : २१)।

इसमें तो कुछ शक नही है कि हमारे ख़ुदावन्द यीशु को एक तरह का जलाल आज कल तो है जो उसको इस दुनिया में रहते हुए नहीं था पर इस बात पर भी ग़ौर करना चाहिये कि मुजस्सिम होकर और इस दुनिया में रहतें हुए मसीह एक अजीब तरह का जलाल रखता था। इस जलाल का ज़िक्र भी है नये अहदनामे में।

यूहन्ना १२ : २२ में लिखा है कि जब चन्द यूनानी आदमी मसीह के पास आये तब यीशु ने कहा कि "वह वक्त आ गया कि इब्न ए आदम जलाल पाए"। २४ और २८ वें पदों पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि यहाँ यीशु मसीह उस ज़लाल के बारे में ज़िक्र करता था जो सलीब के ज़रिये से आशकारा हुआ।

फिर देखिये यूहन्ना-१३ : ३१, ३२" "यीशु ने कहा कि इब्न ए आदम ने जलाल पाया और ख़ुदा ने उसमें जलाल पाया और ख़ुदा भी उसे अपने में जलाल देगा बल्कि उसे फ़िल्फ़ौर जलाल देगा" और उसके साथ यूहन्ना १७ : १ मिला लीजिये जहाँ मसीह ने दूआ की कि ऐ बाप वह घड़ी आ पहुँची अपने बेटे का जलाल ज़ाहिर कर ताकि बेटा तेरा जलाल ज़ाहिर करे" और फिर उसी बाब में (१७ : २२) वह जलाल जो तू ने मुझे दिया है मैंने उन्हे दिया है"।

इब्रानियो को ख़त में (२ : ९) एक आइत हैं जो बहुत ग़ौर करने के लाइक़ है वहाँ तो यह लिखा है कि हम उसको देखते हैं जो फ़िरिश्तों से कुछ ही कम किया गया याने यीशु को कि मौत का दुख सहने के सबब जलाल और इज्ज़त का ताज उसे पहिनाया गया है ताकि ख़ुदा के फ़ज़ल से वह हर एक आदमी के लिये मौत का मज़ा चक्खे"। यहाँ यह नही लिखा है कि पहिले मौत हुई और बाद उसके उसको जलाल मिला लेकिन यह कि उसको इसलिये जलाल और इज्ज़त का ताज पहिनाया गया था ताकि वह हर एक आदमी के लिये मर जाय।

मुकाशफ़ा की किताब मे कई एक बातें हैं जो बिलकुल इसके साथ मिल जाती हैं। आसमान मे यीशु मसीह के बारे में सलीब उठाना और मर जाना शर्मिन्दगी की बातें नही गिनी जाती हैं बल्कि जलाल बख़्श बाते। देखिये मुकाशफ़ा : ५ : ६, १२; जलाली मसीह कैसा दिखलाई देता है? "गोया ज़बह किया हुआ एक बररा"। और बेशुमार फ़रिश्ते और बुज़ुर्ग बुलन्द आवाज़ से उसकी तारीफ़ करते हैं यह कहते हुए कि "ज़बह किया हुआ बररा ही क़ुदरत और दौलत और हिकमत और ताक़त और इज्ज़त और तमजीद और हम्द के लाइक़ है"।

इन सब बातों के ज़रिये से (और नये अहदनामे में बहुत सी और बातें हैं जो उनके बराबर हैं) यह बहुत साफ़ दिखलाई देता है कि ख़ुदा की नज़र में और रसूलो के ख़ियाल मे यीशु मसीह का इस दुनिया में आना और सलीब पर मारा जाना न सिर्फ़ जलाल पाने के सबब थे पर आप जलाल दिखलाने के बाइस हुए।

हम बड़ी भूल मे पड़ते हैं हम ख़ियाल करते हैं कि दुनिया में आने और दुख उठाने से हमारे ख़ुदावन्द का जलाल ढांपा गया पर सचमुच इन ही बातों के ज़रिये से वह हक़ीक़तन ज़ाहिर हुआ।

मालूम होता है कि वह तालीम जो ख़ुदावन्द यीशु बार बार अपने शागिर्दों को दिया करता था अब तक मसीहियो के दिलो में नहीं बैठ गयी, वह तालीम क्या थी? यह कि बड़प्पन और बुज़ुर्गी और हक़ीक़ी जलाल शान औ शौकत और दौलत और दुनयवी इज़्ज़त के वसीले से पैदा नही होता है पर फ़रोतनी और हलीमी से और दूसरो के लिये ख़िदमत करने से।

मुसलमान समझते हैं कि ख़ुदा का मुजस्सिम होना नामुम्किन है क्योंकि ऐसी बात के ज़रिये से उसके जलाल में ख़लल तो होने

पावेगा। और हिन्दू समझते हैं कि ईश्वर का दुःख उठाना और मर जाना अनहोनी बात है। पर इन बातों के बारे मे हम फ़ख़ करते हैं क्योंकि मुजस्सिम होने और मर जाने हां सलीब पर मर जाने के ज़रिये से ख़ुदा का जलाल ज़ाहिर हुआ है।

ख़ुदा का जलाल क्या है? तख़्त नशीन होना, शान ओ शौकत के साथ रहना लोगों को सज़ा देना? नही, कभी नही, ख़ुदा का जलाल इस में है कि वह अपनी मुहब्बत ज़ाहिर करे और इन्सानो को नजात देने के लिये दुख और मुसीबत उठाने को तैयार होवे। इन्जील के यही माने है।

ख़ुदा मे वे ही सिफ़तें रौनक़दार दिखलाई देती हैं जो इन्सानो मे उमदा गिनी जाती है। हमारे ख़ुदावन्द ने न सिर्फ़ ज़ुबानी तौर पर बल्कि नमूना दे के दिखलाया कि हक़ीक़ी बड़ाई या बुज़ुरगी क्या है। आप लोग याद रखते होगे कि जब यह बात पेश आयी थी कि सब से बड़ा कौन है? यीशु मसीह ने कैसा जवाब दिया उसने बतलाया कि वह जो हलीम और दीन होता है (एक बच्चे की मानिन्द) और वह जो सभो की ख़िदमत करता है वही सब से बड़ा है। "मैं तुम से सच कहता हूँ कि अगर तुम न फिरो और बच्चो की मानिन्द न बनो तो आसमान की बादशाहत मे हरगिज़ दाख़िल न होगे। पस जो कोई अपने आप को इस बच्चे की मानिन्द छोटा बनाएगा वही आसमान की बादशाहत मे बड़ा होगा" (मती १८ : ३, ४) फिर "जो तुम में बड़ा है वह तुम्हारा ख़ादिम बने और जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा वह छोटा किया जायगा और जो अपने आपको छोटा बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा" (मती २३ : ११, १२)। एक और मरतबा जब यह बात पेश आयी मसीह ने अपने शागिर्दों के पाओ को धोया। और हम को समझ लेना चाहिये कि ख़ुदा

के बेटे के मुजस्सिम होते और मर जाते ख़ुदा के जलाल मे किसी तरह का ख़लल नही हुआ पर हक़ीक़तन ऐसा करने से उसका जलाल आशकारा हुआ।

ख़ुदा क्या है? ख़ुदा मुहब्बत है और वही मुहब्बत ख़ास तौर पर इस दुनिया मे आने और इन्सानों की ख़िदमत करने और सब लोगो के लिये मर जाने के ज़रिये से बख़ूबी ज़ाहिर हुई।

याद रखिये कि ख़ास करके मुअजिज़ात ख़ुदावन्द का जलाल कुछ न कुछ दिखलाते हैं पर उसका हलीम होना और आदमियो की ख़िदमत मे लगे रहना और आख़िरकार उसके लिये सलीब पर अपनी जान को देना इनही बातो के वसीले से उसका जलाल अजीब तौर पर आशकारा होता है।

हम सलीब की ख़ुशख़बरी दुनिया भर में इस सबब सुनाते हैं कि सलीब पर चढ़ाया जाकर यीशु मसीह जलालवर हुआ और सलीब के ज़रिये से शैतान पर ग़ालिब आकर दुनिया को नजात देता है।

भाइयो और बहिनो हम यीशु मसीह के शागिर्द और ख़ादिम हैं। अगर हम चाहते हैं कि अपने ख़ुदा के जलाल को ज़ाहिर करे तो सब से ज़रूरी बात यह है कि हम दौलत और इज़्ज़त और दुनयवी बुज़ुर्गी और बड़ाई के लिए फ़िक्रमन्द न होवें पर याद रक्खें कि जहां तक हम अपने ख़ुदावन्द यीशु मसीह की मानिन्द हलीम और फ़रोतन होवे और सब लोगो की ख़िदमत मे लगे रहे और उनके लिये दुःख और मुसीबत और तकलीफ़ उठाने को तय्यार होवे वहां तक हम अपने ख़ुदावन्द का जलाज ज़ाहिर करेंगे।